राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय
दैनिक समाचार में
प्रेसनोट, नोटिस, वेपार संबंधित संपर्क करें
संपर्क नं.-7490923915
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण बुधवार 16 सितंबर 2026 वर्ष-9,अंक-225 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

राजस्थान निकाय चुनाव के नतीजों पर सीएम भजनलाल शर्मा बोले, यह कार्यकर्ताओं की मेहनत और पीएम मोदी के नेतृत्व की जीत

जयपुर।

राजस्थान नगर निकाय चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की बंपर जीत के बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सोमवार को भाजपा के प्रदेश कार्यालय पहुंचे। यहां उन्होंने पत्रकारों से बात करते हुए इस ऐतिहासिक जीत का श्रेय पार्टी के बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और पिछले ढाई साल के विकास कार्यों को दिया।

सीएम भजनलाल शर्मा ने कहा, ÷ये जीत भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं की मेहनत, सरकार के ढाई साल और विकास कार्यों को जमीन पर उतारते हुए किए गए कार्यों को लेकर हुई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस चुनाव में भी हमारा चेहरा थे। सभी कार्यकर्ताओं और सभी नेताओं ने एकजुटता के साथ जमीन पर उतरकर काम किया और सरकार की कार्य योजना को लोगों तक पहुंचाने का काम किया।÷इतिहास किताबें खोजें उन्होंने कहा, ÷भाजपा ने जो वादा किया था, उसे निभाया है। हम अपने वादों को लेकर निश्चित रूप से काम कर रहे हैं और भरोसा दिलाते हैं कि जनता से किए गए सभी वादे पूरे किए जाएंगे। एक देश एक चुनाव के तहत हमने राजस्थान में यह संकल्प लिया था कि हम एक साथ चुनाव करेंगे और हम एक साथ चुनाव करा ही रहे हैं।

कांग्रेस ने हमेशा लोगों से झूठे वादे किए, लेकिन उन वादों को सही दिशा में पूरा करने का काम हमने किया।÷ भजनलाल शर्मा ने कहा, ÷आज मैं राज्य के नगर निकाय चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की ऐतिहासिक और शानदार जीत के लिए राजस्थान की जनता का दिल से आभार व्यक्त करता हूं। मैं उन सभी पार्टी कार्यकर्ताओं का भी धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस जीत को हासिल करने के लिए अपना समय और मेहनत लगाई। मैं यह जीत उन्हें और राजस्थान

की जनता को समर्पित करता हूं और उन्हें बधाई व शुभकामनाएं देता हूं।

÷ उन्होंने कहा कि राजस्थान की जनता ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले ढाई वर्षों में राज्य में हुए ऐतिहासिक कार्यों पर अपनी मुहर लगाई है। उन्होंने पीएम के 'विकसित भारत' और 'विकसित राजस्थान' के विजन को अपनाया है। सीएम ने युवाओं का जिक्र करते हुए कहा, ÷राजस्थान के युवाओं ने एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर भरोसा जताया है। देशभर के युवा उनके विजन को आगे बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं और मजबूती से उनके साथ खड़े हैं।÷

पहला कॉलम

जुए के अड्डे पर छापा मारने पहुंची पुलिस टीम पर बम से हमला, एएसआई गंभीर घायल

मुर्शिदाबाद के खांड़ेड़ा गांव में वारदात; हमलावरों की तलाश में पुलिस का अभियान, कई संदिग्ध हिरासत में

कोलकाता ।

पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में जुए के अड्डे पर कार्रवाई करने पहुंची पुलिस टीम पर बम से हमला किए जाने का मामला सामने आया है। घटना रविवार रात सालार थाना क्षेत्र के खांड़ेड़ा गांव में हुई। हमले में एक पुलिस अधिकारी गंभीर रूप से घायल हो गए। घायल अधिकारी की पहचान एएसआई सादेक अली के रूप में हुई है। उन्हें इलाज के लिए बहरमपुर स्थित मुर्शिदाबाद मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, खांड़ेड़ा गांव में जुए का अड्डा संचालित होने की सूचना मिली थी। इसके बाद पुलिस टीम रात में छापेमारी के लिए मौके पर पहुंची। पुलिस के पहुंचते ही वहां मौजूद कुछ लोग भागने लगे। आरोप है कि इसी दौरान उन्होंने पुलिसकर्मियों को निशाना बनाकर लगातार बम फेंकना शुरू कर दिया। हमले के दौरान एएसआई सादेक अली बम की चपेट में आ गए और गंभीर रूप से घायल हो गए। साथी पुलिसकर्मियों ने उन्हें तत्काल अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका इलाज जारी है। गांव में बढ़ाई गई सुरक्षा घटना की जानकारी मिलते ही मुर्शिदाबाद पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे। पुलिस ने इलाके की घेराबंदी कर आरोपितों की तलाश शुरू कर दी। मामले में कई संदिग्धों को हिरासत में लेकर पूछताछ किए जाने की जानकारी सामने आई है। पुलिस यह पता लगाने में जुटी है कि हमले में कितने लोग शामिल थे और बम कहां से लाए गए थे। आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए अलग-अलग स्थानों पर अभियान चलाया जा रहा है। सुबह तक गांव में तैनात रही पुलिस किसी भी तरह की अप्रिय घटना को रोकने के लिए सोमवार सुबह भी खांड़ेड़ा गांव में बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई। पुलिस ने इलाके में निगरानी बढ़ा दी है। अधिकारियों का कहना है कि मामले की जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी और हमले में शामिल लोगों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा।

लंदन की टेम्स नदी किनारे पहली बार गंगा आरती, हजारों लोग हुए शामिल

लंदन ।

लंदन में टेम्स नदी के किनारे पहली बार गंगा आरती का भव्य आयोजन हुआ। इस आयोजन ने हजारों लोगों को आकर्षित किया। चिन्मय मिशन यूके द्वारा टोटली टेम्स फेस्टिवल के सहयोग से आयोजित समारोह रोशनी और कृतज्ञता का प्रतीक था, और चिन्मय मिशन के 75 वर्षों के वैश्विक समारोह का भी हिस्सा था। आयोजकों का उद्देश्य भारत में गंगा नदी के तट पर होने वाली विश्व-प्रसिद्ध आरती की आध्यात्मिक भावना को लंदन में दोहराना था। चिन्मय मिशन यूके की रेजिडेंट टीचर ब्रह्मचारिणी श्रीप्रिया चैतन्य ने बताया कि पीढ़ियों से समुदाय गंगा के किनारे इकट्ठा होकर नदी, प्रकृति और जीवन को बनाए रखने वाली हर चीज के प्रति आभार व्यक्त करते आए हैं। उन्होंने कहा, टेम्स पर हुई गंगा आरती भी उसी भावना को आगे बढ़ाती है और लोगों को आभार, उम्मीद और एकता के साझा पल में एक साथ लाती है। चिन्मय मिशन के लिए गंगा ज्ञान के प्रवाह का भी प्रतीक है, जो उनके संस्थापक स्वामी चिन्मयानंद की विरासत का जश्न मनाता है, जिन्होंने वेदांत के शाश्वत ज्ञान को हिमालय से लोगों के रोजमर्रा के जीवन तक पहुंचाया। इस समारोह का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश हिंदू और दक्षिण एशियाई समुदाय के लिए एक बड़े उत्सव का आयोजन करना और सभी पृष्ठभूमि के लोगों को प्रकृति के प्रति आभार और सम्मान व्यक्त करने के लिए एक साथ लाना था। आयोजकों ने पर्यावरण संरक्षण का विशेष ध्यान रखा। चिन्मय मिशन के एक प्रवक्ता ने स्पष्ट किया कि आरती पूरी तरह से जमीन पर आयोजित की गई थी और समारोह की कोई भी सामग्री टेम्स नदी में नहीं डाली गई।

भाकपा ने ब्रिक्स घोषणापत्र का स्वागत किया, वैश्विक व्यवस्था में सुधार की वकालत की

नई दिल्ली ।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) ने ब्रिक्स घोषणापत्र का स्वागत कर एक अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण, लोकतांत्रिक और न्यायसंगत अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की दिशा में ब्रिक्स समूह को नेतृत्व करने की वकालत की है। भाकपा महासचिव डी.राजा ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र में ग्लोबल साउथ की अधिक भागीदारी और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) व विश्व बैंक में सुधार का आह्वान महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने निर्णय लेने वाली संस्थाओं में भारत और अन्य विकासशील देशों को शामिल करने के प्रयासों में तेजी लाने पर जोर दिया। भाकपा महासचिव राजा ने ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के इतर भारत-चीन संबंधों में हुई प्रगति का उल्लेख किया, जो भाकपा के लंबे समय से चले आ रहे रुख को मजबूत करता है कि दोनों पड़ोसी देशों के बीच विवादों का समाधान बातचीत और कूटनीति के जरिए होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, पार्टी ने पश्चिम एशिया में जारी हिंसा पर ब्रिक्स देशों द्वारा जाहिर की गई स्पष्ट चिंता और गाजा में तत्काल संघर्षविराम के आह्वान का भी स्वागत किया।

हिंदी दूसरी भारतीय भाषाओं की प्रतिद्वंद्वी नहीं, संवाद और एकता की कड़ी अमित शाह

- हिंदी दिवस पर गृह मंत्री ने देशवासियों को दी शुभकामनाएं

कहा- भाषाई विविधता भारत की सबसे बड़ी ताकत; मातृभाषा से जुड़े रहने की युवाओं से अपील

नई दिल्ली (ईएमएस)। हिंदी दिवस के अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने देशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए भारत की भाषाई विविधता को देश की बड़ी ताकत बताया। उन्होंने कहा कि भारत में बोली जाने वाली अलग-अलग भाषाएं किसी कमजोरी का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विविधता में एकता की भावना को मजबूत करती हैं। अमित शाह ने कहा कि प्रत्येक भाषा अपने साथ इतिहास, लोक परंपराएं, संस्कृति और दुनिया को देखने का एक अलग नजरिया लेकर चलती है। भाषाओं की यही विविधता नई पीढ़ी के मूल्यों को आकार देने के साथ भारतीय समाज को उसकी जड़ों से जोड़े रखती है। गृह मंत्री ने कहा कि हिंदी का उद्देश्य देश की अन्य भारतीय भाषाओं के साथ प्रतिस्पर्धा करना नहीं है। हिंदी अलग-अलग भाषाई समुदायों के बीच संवाद स्थापित करने और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। उन्होंने कहा कि भारत का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि अलग-अलग मातृभाषाएं बोलने वाले लोगों ने हिंदी को व्यापक संवाद की भाषा बनाने में योगदान दिया है। दुनिया की भाषाएं सीखें, मातृभाषा को न छोड़ें अमित शाह ने युवाओं से अपील की कि वे दुनिया की अधिक से अधिक भाषाएं सीखें, लेकिन अपनी मातृभाषा से दूरी न बनाएं। उन्होंने अभिभावकों से बच्चों के साथ अपनी मातृभाषा में बातचीत करने का आग्रह किया। शाह ने कहा कि अपनी भाषा बोलने में किसी को हीन भावना नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि भाषा व्यक्ति को उसकी मां, मिट्टी, इतिहास और संस्कृति से जोड़ती है।

उन्होंने बताया कि 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति के आह्वान में भारतीय भाषाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने भाषा और आत्मसम्मान को जोड़ते हुए

राजपथ का नाम बदलकर कर्तव्य पथ किए जाने तथा नए कानूनों के भारतीय भाषाओं में उपयोग का भी उल्लेख किया। गुजराती मातृभाषा, लेकिन हिंदी से आम लोगों से जुड़ाव गृह मंत्री ने अपनी मातृभाषा का जिक्र करते हुए कहा कि उनकी मातृभाषा गुजराती है, लेकिन देश के अलग-अलग हिस्सों में आम लोगों से सीधे संवाद करने में हिंदी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

राजस्थान निकाय चुनाव में भाजपा आगे, 3624 वार्डों में जीत दर्ज की

-कांग्रेस ने 3093 वार्ड जीते, निर्दलीयों के खाते में 2034 सीटें आईं

जयपुर।

राजस्थान के 309 नगरीय निकायों के चुनाव परिणामों में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सबसे आगे चल रही है। कांग्रेस ने भाजपा को कड़ी टक्कर दी है। राज्य निर्वाचन आयोग की ओर से सोमवार दोपहर दो बजे तक घोषित परिणामों के अनुसार भाजपा ने 3,624 वार्डों में जीत दर्ज की है, जबकि कांग्रेस के उम्मीदवारों ने 3,093 वार्डों में जीत हासिल की है। निर्दलीय उम्मीदवार भी 2,034 वार्डों में जीत दर्ज कर मजबूत स्थिति में हैं। आंकड़ों के अनुसार राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (आरएलपी) ने 56 वार्डों में जीत दर्ज की है। भारत आदिवासी पार्टी को आठ, बहुजन समाज पार्टी (बसपा) को 16, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) को 37 और आम आदमी पार्टी (आप) को 10 वार्डों में जीत मिली है। इन परिणामों में निर्विरोध चुने गए 77 उम्मीदवारों को भी शामिल किया गया है। राज्य निर्वाचन आयोग के अधिकारियों के मुताबिक राज्य में कुल 309 नगरीय निकायों के चुनाव कराए जा रहे हैं। इनमें 10 नगर निगम, 47 नगर परिषद और 200 से अधिक नगरपालिकाएं शामिल हैं। इन निकायों के कुल 10,244 वार्डों के परिणाम घोषित किए जाने हैं। दोपहर दो बजे तक उपलब्ध आंकड़ों में भाजपा ने कांग्रेस पर बढ़त बना रखी है, हालांकि निर्दलीय उम्मीदवारों की बड़ी संख्या में जीत ने भी चुनाव परिणामों को महत्वपूर्ण बना दिया।

महाराष्ट्र में गणेशोत्सव की धूम, 'गणपति बप्पा मोरया' के जयकारों से गूंजा मुंबई

11 दिवसीय उत्सव शुरू, लालबाग समेत प्रमुख गणेश मंडलों में उमड़े श्रद्धालु; विसर्जन 25 सितंबर को

मुंबई।

महाराष्ट्र में सोमवार से 11 दिवसीय गणेश उत्सव की शुरुआत हो गई। गणेश चतुर्थी के मौके पर मुंबई समेत प्रदेश के विभिन्न शहरों में घरों और सार्वजनिक पंडालों में भगवान गणेश की प्रतिमाओं की स्थापना की गई। इसके साथ ही शहर की गलियों से लेकर भव्य पंडालों तक 'गणपति बप्पा मोरया' के जयकारे गूंजने लगे। ढोल-ताशों, भक्ति गीतों और आकर्षक सजावट के बीच मायानगरी पूरी तरह गणपति भक्ति के रंग में रंग गई है। मुंबई में गणेशोत्सव धार्मिक आस्था के साथ सामुदायिक उत्साह और सांस्कृतिक परंपरा का भी प्रमुख पर्व माना जाता है। लालबाग से लेकर परेल, गिरगांव, अंधेरी, चेंबूर और फोर्ट तक जगह-जगह आकर्षक पंडाल और रोशनी की सजावट की गई है। 11 दिवसीय उत्सव का समापन 25 सितंबर को अनंत चतुर्दशी के दिन होगा। इस दौरान श्रद्धालु ढोल-नगाड़ों के साथ गणपति प्रतिमाओं को विसर्जन स्थलों तक ले जाएंगे।

प्राण प्रतिष्ठा के साथ शुरू हुई पूजा-अर्चना बड़े गणेश मंडलों ने पहले ही विशाल प्रतिमाओं की स्थापना कर दी थी। वहीं, रविवार रात से छोटे मंडलों और परिवारों ने भी गणपति प्रतिमाओं को घरों और पंडालों में स्थापित किया। सोमवार को प्राण प्रतिष्ठा, विशेष पूजा, आरती और मंत्रोच्चार के साथ उत्सव की विधिवत शुरुआत हुई। सड़कों पर भक्ति गीतों और ढोल-ताशों के बीच श्रद्धालुओं में खास उत्साह नजर आया। लालबाग में उमड़ेगा भक्तों का सैलाब गणेशोत्सव के दौरान लालबाग हमेशा की तरह प्रमुख आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। लालबागचा राजा, चिंचपोकली, गणेश गली और तेजुकाया जैसे प्रसिद्ध गणपति मंडलों में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की उम्मीद है। माटुंगा स्थित जीएसबी सेवा मंडल ने भी

गणपति प्रतिमा को सोने के आभूषणों से सजाया है। कीमती आभूषणों और चढ़ावे की सुरक्षा के लिए विशेष इंतजाम किए गए हैं। दादर, क्रॉफर्ड मार्केट और लोहार चॉल जैसे प्रमुख बाजारों में भी गणेश उत्सव को लेकर भारी चहल-पहल रही।

अब बीजिंग में मिलेंगे ब्रिक्स देश, चीन के हाथों में होगी ब्रिक्स की कमान

नई दिल्ली।

नई दिल्ली में आयोजित ब्रिक्स सम्मेलन के बाद अब सदस्य देशों की अगली बैठक बीजिंग में होगी। नई दिल्ली घोषणा पत्र-2026 के साथ भारत ने ब्रिक्स की अध्यक्षता चीन को सौंपने की प्रक्रिया पूरी कर दी गई है। वैश्विक स्तर पर बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव और अमेरिका के साथ व्यापार एवं रणनीतिक टकराव के बीच चीन के नेतृत्व में ब्रिक्स की आगामी दिशा को लेकर दुनिया भर की नजरें रहेंगी।

नई दिल्ली सम्मेलन में सदस्य देशों ने विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के बीच सहयोग बढ़ाने, व्यापार एवं निवेश को मजबूत करने और वैश्विक संस्थाओं में सुधार की जरूरत पर जोर दिया है। घोषणा पत्र में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था और विकासशील देशों की भूमिका मजबूत करने का संकल्प लिया गया है। चीन के हाथों अध्यक्षता आने के बाद ब्रिक्स के एजेंडे में स्थानीय मुद्राओं में व्यापार,ब्रिक्स की अपनी मुद्रा, वित्तीय सहयोग, नई विकास परियोजनाएं और पश्चिमी आर्थिक दबावों से निपटने के विकल्प प्रमुख मुद्दे बन सकते हैं। भारत और चीन के बीच सीमा विवाद तथा रणनीतिक मतभेदों के कारण संगठन के भीतर संतुलन बनाए रखना चीन के लिए चुनौती होगी। भारत ने स्पष्ट किया है, ब्रिक्स किसी देश के खिलाफ गठबंधन नहीं, बल्कि वैश्विक दक्षिण की आवाज को मजबूत करने का मंच है। अब बीजिंग में होने वाली अगली बैठक यह तय करेगी, चीन इस मंच को किस दिशा में आगे ले जाता है।

दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति भारतीय पेमेंट सिस्टम देख हुए गदगद

किताबें खरीदकर कार्ड से दिए पैसे, बोले- ये कमाल था

नई दिल्ली।

दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा ने भारतीय पेमेंट सिस्टम की जमकर तारीफ की है और इसे एक कमाल का अनुभव बताया है। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान नई दिल्ली में अपने प्रवास के दौरान, उन्होंने एक व्यक्तिगत अनुभव साझा किया जिसने उन्हें भारत की डिजिटल भुगतान प्रणाली की दक्षता का कायल बना दिया।

रामाफोसा ने बताया कि उन्होंने स्थानीय बाजार से किताबें खरीदीं और अपने कार्ड से भुगतान किया। खास बात यह थी कि यह भुगतान भारतीय रुपये में हुआ, जो अंततः उनके दक्षिण अफ्रीकी रैंड खाते से सेटल हुआ।

उस समय, लगभग 1 रुपए की कीमत 5.93 दक्षिण अफ्रीकी रैंड के बराबर थी।

पत्रकारों से बात करते हुए, राष्ट्रपति रामाफोसा ने कहा कि उन्होंने इस अनुभव को बेहतरीन पाया और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी इस बारे में बात की। उन्होंने स्थानीय मुद्रा में व्यापार को बढ़ावा देने के ब्रिक्स देशों के साझा लक्ष्य के संदर्भ में इस प्रणाली की सराहना की।

उन्होंने कहा, हमने स्थानीय मुद्रा भुगतान प्रणाली में रुचि पर चर्चा की है, और हमारे केंद्रीय बैंक इस पर सक्रिय रूप से बातचीत कर रहे हैं। मुझे लगता है कि हम इस पर जल्द ही एक समझौते पर पहुंच जाएंगे। यह हमारे देशों के बीच व्यापार बढ़ाने के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। रामाफोसा ने स्पष्ट किया कि यह दृष्टिकोण किसी अन्य पेमेंट सिस्टम या मुद्रा के खिलाफ नहीं है, बल्कि यह अपने देशों के बीच व्यापार को बढ़ावा देने का एक व्यावहारिक और कुशल तरीका है।

ब्रिक्स के 18वें शिखर सम्मेलन में अपनाई गई नई दिल्ली घोषणा में भी व्यापार और निवेश में स्थानीय मुद्राओं के अधिक इस्तेमाल का समर्थन किया गया था। घोषणा में कहा गया था कि ब्रिक्स पेमेंट टास्क फोर्स सीमा पार भुगतान और मैसेजिंग सिस्टम की इंटरऑपरेबिलिटी का अध्ययन कर रहा है।

इसका उद्देश्य तेज, सस्ते, आसान, पारदर्शी और सुरक्षित भुगतान के लिए और काम करने को प्रोत्साहित करना है। हालांकि, घोषणा में यह भी रेखांकित किया गया कि ये प्रयास राष्ट्रीय प्राथमिकताओं का सम्मान करेंगे और सीमा पार भुगतान के लिए कोई एक ही तरीका नहीं अपनाया जा सकता, क्योंकि प्रत्येक देश की अपनी विशिष्ट वित्तीय संरचनाएं और आवश्यकताएं हैं। रामाफोसा ने ब्रिक्स अध्यक्ष के रूप में भारत की नेतृत्व क्षमता और शिखर सम्मेलन की सफल मेजबानी की भी तारीफ की। उन्होंने कहा कि नई दिल्ली ने चुनौतियों के बावजूद सभी सदस्य देशों को एकजुट कर नई दिल्ली घोषणा अपनवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिखर सम्मेलन के बाद एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने इसे बहुत अच्छी तरह से आयोजित सम्मेलन बताया। उन्होंने भारत को इस बात के लिए बधाई दी कि इतने बड़े और जटिल आयोजन में सब कुछ सुचारु रूप से संपन्न हुआ और कोई भी अप्रत्याशित घटना नहीं

घटी। रामाफोसा के इन बयानों से भारत की डिजिटल प्रगति और अंतरराष्ट्रीय मंच पर उसकी बढ़ती भूमिका की स्वीकार्यता स्पष्ट रूप से झलकती है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

विश्व ओजोन दिवस : पृथ्वी के सुरक्षा कवच का संरक्षण

(लेखक- सुनील कुमार महला)

ओजोन परत नीले ग्रह यानी कि हमारी पृथ्वी के लिए एक प्राकृतिक सुरक्षा कवच है। यह वह परत है जो, सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी (यूवी) किरणों के बड़े हिस्से को अवशोषित कर उन्हें पृथ्वी की सतह तक सीधे पहुंचने से रोकती है। वास्तव में, विशेष रूप से यूवी-बी और यूवी-सी किरणों का अधिकांश भाग ओजोन परत द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है। इससे मनुष्यों, पशु-पक्षियों, वनस्पतियों और समस्त जीव-जगत की रक्षा होती है। यदि ये किरणें अधिक मात्रा में पृथ्वी तक पहुंचें तो त्वचा कैंसर, आंखों को नुकसान, कोशिकाओं पर प्रतिकूल प्रभाव, फसलों को क्षति तथा समुद्री खाद्य श्रृंखला पर गंभीर असर पड़ सकता है। इसलिए ओजोन परत का संरक्षण पृथ्वी पर जीवन की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

यहां पाठकों को बताता चलूं कि हर वर्ष 16 सितंबर को विश्व ओजोन दिवस मनाया जाता है। वर्ष 2026 की थीम है-'शीतित ग्रह के लिए वैश्विक कार्रवाई - मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के किगाली संशोधन के तहत सतत शीतलन के 10 वर्ष पूरे होने का जश्न।' इस थीम का उद्देश्य ओजोन परत के संरक्षण के साथ-साथ पर्यावरण के अनुकूल और ऊर्जा-कुशल शीतलन तकनीकों को बढ़ावा देना है।

बहरहाल, यहां पाठकों को जानकारी देता चलूं कि मानव की अनियंत्रित और स्वार्थी गतिविधियों ने कभी जीवनदायिनी ओजोन परत को गंभीर संकट में डाल दिया था। दरअसल, 1980 के दशक में एयर कंडीशनर, रेफ्रिजरेटर और एरोसोल स्प्रे में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होने वाले क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी) और हैलोन जैसी गैसें समताप मंडल (स्ट्रैटोस्फियर) में पहुंचकर ओजोन अणुओं को तेजी से नष्ट करने लगीं। इसके परिणामस्वरूप, अंटार्कटिका के ऊपर एक विशाल 'ओजोन छिद्र' विकसित हुआ। समय रहते कदम नहीं उठाए जाते तो सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी (यूवी-बी) किरणों का बढ़ा हुआ प्रभाव त्वचा कैंसर, मोतियाबिंद, फसलों को नुकसान और समुद्री खाद्य श्रृंखला के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकता था।

ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले प्रमुख रसायनों में क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी), हैलोन, कार्बन टेट्राक्लोराइड और मिथाइल क्लोरोफॉर्म आदि शामिल हैं। इनका उपयोग पहले रेफ्रिजरेटर, एयर कंडीशनर, अग्निशामक यंत्र और एरोसोल जैसे उत्पादों में होता था। इन रसायनों को नियंत्रित करने के लिए वर्ष 1987 में मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल अपनाया गया, जिसे पर्यावरण संरक्षण की दिशा में दुनिया के सबसे सफल अंतरराष्ट्रीय समझौतों में माना जाता है। सरल शब्दों में कहें तो मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल का मुख्य उद्देश्य ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले रसायनों, जैसे क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसीज), के उत्पादन और उपयोग को चरणबद्ध तरीके से कम करना और समाप्त करना है।भारत भी मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के कार्यान्वयन में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। फिर भी ओजोन परत की सुरक्षा के लिए निरंतर प्रयास जरूरी हैं। यह केवल पर्यावरण का विषय नहीं, बल्कि मानव स्वास्थ्य और पृथ्वी पर जीवन की सुरक्षा से जुड़ा प्रश्न है। इसलिए पर्यावरण के अनुकूल शीतलन तकनीकों को अपनाना और ओजोन-क्षयकारी पदार्थों के उपयोग को कम करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।इसके बाद, वर्ष 2016 में किगाली संशोधन अपनाया गया, जिसके तहत हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (एचएफसी) के उपयोग को धीरे-धीरे कम करने का लक्ष्य रखा गया। उल्लेखनीय है कि मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के कड़े अनुपालन से ओजोन-क्षयकारी गैसों के वैश्विक उत्सर्जन में लगभग 99 प्रतिशत तक की कमी आई है। इसके सकारात्मक परिणाम अब आंकड़ों में भी दिखाई दे रहे हैं। नासा और विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) के वैज्ञानिक आकलनों के अनुसार, अंटार्कटिक ओजोन छिद्र का अधिकतम आकार अब लगभग 22.8 मिलियन वर्ग किलोमीटर के दायरे में रह गया है, जो वर्ष 2000 के 28.4 मिलियन वर्ग किलोमीटर के रिकॉर्ड स्तर से काफी कम है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यदि मौजूदा नियमों का सख्ती से पालन जारी रहा तो दुनिया के अधिकांश हिस्सों में ओजोन परत 2040 तक, आर्कटिक में 2045 तक और अंटार्कटिका के ऊपर 2066 तक वर्ष 1980 के ऐतिहासिक स्तर पर लौट सकती है।हालांकि, पर्यावरण को लेकर पूरी तरह निश्चिंत होने का समय अभी नहीं आया है। जंगलों की भीषण आग, अनियंत्रित रॉकेट प्रक्षेपण, अप्रतिबंधित औद्योगिक रसायनों, जैसे डाइक्लोरोमीथेन, और लगातार बढ़ता कार्बन उत्सर्जन नई चुनौतियां पैदा कर रहे हैं। जंगलों की आग से उठने वाला रासायनिक धुआं तथा अंतरिक्ष मलबे के ऊपरी वायुमंडल में जलने से उत्पन्न एरोसोल ओजोन की रिकवरी की गति को प्रभावित कर सकते हैं। इसके अलावा, तेजी से बढ़ते अंतरिक्ष अभियानों, रॉकेट प्रक्षेपणों और समताप मंडल में उड़ने वाले विमानों से निकलने वाले ब्लैक कार्बन और कालिख को लेकर भी गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। यह स्पष्ट संकेत है कि प्रकृति के साथ किया गया कोई भी असंतुलन हमारे इस अदृश्य सुरक्षा कवच को प्रभावित कर सकता है।

वास्तव में,ओजोन परत की हिफाजत केवल अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों या सरकारी संधियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी दैनिक जीवनशैली और उपभोक्ता प्राथमिकताओं से भी जुड़ी है। व्यक्तिगत स्तर पर घर और कार्यालय में इस्तेमाल होने वाले कूलिंग उपकरणों के प्रति सजग रहना जरूरी है। एयर कंडीशनर और रेफ्रिजरेटर खरीदते समय यह देखना चाहिए कि उनमें ओजोन-क्षयकारी सीएफसी और एचसीएफसी का उपयोग न हो। पुराने उपकरणों की समय पर मरम्मत और सुरक्षित पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग) भी आवश्यक है, क्योंकि उपकरणों से गैसों का रिसाव पर्यावरण के लिए नुकसानदेह हो सकता है। एरोसोल स्प्रे, फोम पैकेजिंग, कीटनाशकों और रासायनिक विलायकों के मामले में भी पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इतना ही नहीं, व्यापक स्तर पर ओजोन परत की रक्षा के लिए औद्योगिक और नीतिगत मोर्चे पर निरंतर निगरानी आवश्यक है। मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के साथ-साथ किगाली संशोधन का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करना होगा। हाइड्रोफ्लोरोकार्बन जैसी शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैसों को चरणबद्ध रूप से कम करना, जीवाश्म ईंधनों के सीमित उपयोग और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना तथा औद्योगिक गतिविधियों से होने वाले उत्सर्जन पर नियंत्रण जरूरी है। वाहनों और कल-कारखानों से निकलने वाला नाइट्रस ऑक्साइड भी वायुमंडलीय संतुलन को प्रभावित करता है। इसके साथ ही, अंतरिक्ष अभियानों, रॉकेट प्रक्षेपणों और समताप मंडल से जुड़े विमानों के पर्यावरणीय प्रभावों पर वैज्ञानिक निगरानी तथा आवश्यक नियमन समय की मांग है।

अंतत:, यही कहूंगा कि मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल ने यह साबित किया है कि जब पूरी दुनिया किसी पर्यावरणीय चुनौती के समाधान के लिए एकजुट होकर काम करती है, तो सकारात्मक परिणाम हासिल किए जा सकते हैं। ओजोन परत की रिकवरी मानवता के लिए उम्मीद की एक बड़ी किरण है, लेकिन इस उपलब्धि को स्थायी बनाए रखने के लिए व्यक्तिगत समझदारी, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, पर्यावरण-अनुकूल तकनीक और कड़े वैश्विक नियमों का निरंतर पालन आवश्यक है। ओजोन परत सुरक्षित रहेगी, तभी पृथ्वी पर जीवन सुरक्षित रहेगा।

(सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार।)

(यह लेखक के व्य क्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अ निवार्य नहीं है)

संपादकीय

हिमालयी पानी बम

नेपाल की प्रलयंकारी बाढ़ ने हिमालयी सीमा में बसे देशों की सरकारों को ग्लोबल वार्मिंग से निरंतर बनती हिमनद झीलों के भयावह खतरों के प्रति सचेत किया है। यह संकट एक देश की सीमाओं से परे पूरे हिमालयी क्षेत्रों में व्याप्त है। ऐसे में निगरानी तंत्र को मजबूत करने और इसके दायरे में आने वाले देशों, राज्यों और शहरों को समय रहते सूचना देने के लिए एक प्रभावी सिस्टम विकसित करने की सख्त जरूरत महसूस की जा रही है। साल 2013 में केदारनाथ त्रासदी से उपजी तबाही की तस्वीरें आज भी भारतीय जनमानस की स्मृतियों में ताजा हैं। पूर्वी हिमालय स्थित सिक्किम में भी चालीस हिमनद झीलों का पता चला है। चिंता की बात यह है कि इसमें से सोलह को अधिक जोखिम वाली श्रेणी में रखा गया है। इसी तरह हिमाचल प्रदेश में आईआईटी मंडी के एक अध्ययन में लगातार विस्तार ले रही नौ ग्लेशियर झीलों की पहचान की गई थी। कमोबेश उत्तराखंड में भी ऐसी ही स्थिति बनी हुई है जो जलवायु परिवर्तन के चलते तेजी से पिघलते ग्लेशियरों से उपजे संकट की ओर ध्यान खींचती हैं। आईआईटी के अध्ययन के जरिये तीन हजार पांच सौ मीटर से ज्यादा ऊंचाइयों पर दो हजार से अधिक झीलों का पता चला है। बताया जाता है कि ये झीलें तेजी से बन रही हैं और इनकी संख्या एक दशक पहले की तुलना में 710 अधिक हो गई है। इनका क्षेत्रफल भी लगातार बढ़ रहा है। यह वृद्धि 28 फीसदी बढ़ी बतायी जाती है, जिसके चलते कई रिहायशी इलाकों, शिक्षण संस्थाओं, स्वास्थ्य सुविधाओं और अनेक पुलों पर खतरा मंडरा रहा है। ग्लेशियर टूटने और चट्टानें खिसकने से ये झीलें कितना भयावह रूप ले सकती हैं, उसकी बानगी 26 अगस्त को नेपाल में हुई तबाही में नजर आई है। वहां आज भी हजारों लोग लापता हैं। चट्टानों, पानी, कीचड़ आदि का जो सैलाब घाटियों से गुजरा है, उसने बस्तियों और बुनियादी ढांचे को भारी नुकसान पहुंचाया है। पनबिजली परियोजनाओं की सुरंगों में फंसे लोगों की अभी भी तलाश जारी है। नेपाल हादसे ने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है और बताया है कि ऊंचाई वाली जगहों में झील में बर्फ-चट्टानों के गिरने के बाद इन झीलों को रोकने वाले अवरोध टूटते हैं, जिससे नीचे वाले इलाकों में बेहद तीव्र गति से तबाही आ सकती है। दरअसल, लगातार गर्म होते हिमालय में ग्लेशियरों का पीछे हटना, झीलों का बढ़ना, भूस्खलन और अतिवृष्टि की घटनाएं आपस में मिलकर भयावह स्थिति पैदा करती हैं, जिसका मुकाबला सामान्य आपदा प्रबंधन के उपायों से नहीं किया जा सकता। निस्संदेह, लाखों लोगों का जीवन सुरक्षित करने के लिए ग्लेशियर झीलों के फटने का इंतजार नहीं किया जा सकता। जमीनी स्तर पर निगरानी के साथ ही उपग्रहों के जरिये भी इन झीलों पर नजर रखने की सख्त जरूरत है। रियल-टाइम अर्ली वॉर्निंग सिस्टम को मजबूत करने की आवश्यकता है। इसके अलावा निकासी रास्तों को चिन्हित करने की जरूरत भी है। नीचे नदियों के किनारे बसी बस्तियों व मैदानी इलाकों में बचाव के तौर-तरीकों का नियमित अभ्यास किया जाना चाहिए। इसके साथ ही पुलों, पनबिजली परियोजनाओं और अन्य बुनियादी ढांचों की जांच करके उन्हें अधिक सुरक्षित बनाने की भी जरूरत है। साथ ही इन से जुड़े संभावित खतरों का समय रहते मूल्यांकन किया जाना चाहिए। हिमालयी क्षेत्रों में विकास के नये मॉडल पर भी विचार करने की जरूरत है, जो हिमालयी क्षेत्रों की संवेदनशीलता के अनुरूप हो। इसके लिये जरूरी है कि हिमालयी क्षेत्रों में ऊंचाई वाले संवेदनशील इलाकों में पर्यटन, सड़क और निर्माण कार्यों में पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता दी जाए।

आत्मा की दिवाली है संवत्सरी महापर्व

(लेखक - कांतिलाल मांडोत)

तप त्याग और क्षमायाचना से अंतर्मन को निर्मल करने का पावन पर्व

जैन धर्म में पर्युषण महापर्व आत्मशुद्धि, संयम, तप और त्याग की साधना का पर्व है। इस महापर्व का अंतिम दिन संवत्सरी पर्व कहलाता है। संवत्सरी केवल एक धार्मिक तिथि नहीं, बल्कि आत्मा के भीतर झांकने, वर्षभर के कर्मों का लेखा-जोखा करने और अपने मन को वैर-विरोध से मुक्त करने का अवसर है। इसी कारण संवत्सरी को जैन धर्म में 'आत्मा की दिवाली' कहा गया है। जिस प्रकार दीपावली पर घर-आंगन की सफाई कर दीप जलाए जाते हैं, उसी प्रकार संवत्सरी पर आत्मा में जमा क्रोध, अहंकार, छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेष और मनमुटाव की गंदगी को क्षमा के भाव से दूर कर अंतर्मन में शांति का दीप जलाया जाता है।

पर्युषण के दिनों में जैन समाज तप, त्याग, स्वाध्याय, ध्यान, सामायिक, प्रतिक्रमण और आत्मचिंतन के माध्यम से अपनी जीवनशैली को संयमित करता है। संवत्सरी इस साधना का चरम बिंदु है। इस दिन व्यक्ति दूसरों की गलतियां खोजने के बजाय स्वयं के भीतर झांकता है। पिछले बारह महीनों में उसके व्यवहार से किसी को दुख पहुंचा हो, किसी के साथ विवाद हुआ हो, किसी के मन को ठेस लगी हो या जाने-अनजाने किसी जीव के प्रति हिंसा अथवा अपराध हुआ हो, तो वह उसके लिए हृदय से क्षमा मांगता है। यही संवत्सरी की वास्तविक भावना है।

संवत्सरी के अवसर पर 'मिच्छामि दुक्कड़म' का उच्चारण केवल परंपरा निभाने के लिए नहीं किया जाता। इसका भाव अत्यंत गहरा है। इसका अर्थ है कि मेरे द्वारा मन, वचन अथवा कर्म से किसी को कष्ट पहुंचा हो तो मैं उसके लिए क्षमा चाहता हूं। साथ ही मेरे मन में भी किसी के प्रति कोई शिकायत, द्वेष या वैर न रहे। इस प्रकार क्षमा मांगना और क्षमा करना दोनों आत्मिक शुद्धि की प्रक्रिया बन जाते हैं। जब मनुष्य अपने अहंकार को पीछे रखकर सामने वाले से क्षमा मांगता है, तब उसके भीतर विनय और सरलता का जन्म होता है।

संवत्सरी पर्व पर तपस्या की आराधना का भी विशेष महत्व है। जैन श्रावक-श्राविकाएं अपनी सामर्थ्य और श्रद्धा के अनुसार एक उपवास, दो उपवास तथा अठैई जैसे कठिन तप की आराधना करते हैं। कई साधक एकासन, आयंबिल और अन्य तप साधनाओं के माध्यम से आत्मसंयम का अभ्यास करते हैं। तप का उद्देश्य केवल शरीर को कष्ट देना नहीं, बल्कि इच्छाओं पर नियंत्रण स्थापित करना और आत्मबल को जागृत करना है। जब व्यक्ति अपनी इंद्रियों और मन पर संयम करना सीखता है, तभी वह जीवन में क्षमा, करुणा और अहिंसा को वास्तविक रूप से उतार सकता है।

संवत्सरी के दिन प्रतिक्रमण की विशेष परंपरा है। प्रतिक्रमण का भाव पीछे लौटकर अपने जीवन को देखना है। व्यक्ति विचार करता है कि पूरे वर्ष उसने कहां असावधानी की, किसके प्रति कठोर शब्द कहे, किससे विवाद किया, किसके साथ मनमुटाव हुआ और किन परिस्थितियों में उसके मन में क्रोध या द्वेष उत्पन्न हुआ। यह आत्मनिरीक्षण उसे दूसरों को दोष देने के बजाय स्वयं को सुधारने की प्रेरणा देता है। यही कारण है कि संवत्सरी को आत्ममंथन का महान अवसर माना गया है।

जैन दर्शन में क्षमा को अत्यंत ऊंचा स्थान दिया गया है। मन में जमा हुआ वैर और द्वेष सबसे पहले उसी व्यक्ति को अशांत करता है जिसके भीतर वह रहता है। बाहर से व्यक्ति कितना भी सुखी दिखाई दे, यदि उसके मन में किसी के प्रति क्रोध या शिकायत बनी हुई है तो भीतर शांति नहीं रह सकती। संवत्सरी इस बोझ को उतारने का अवसर देती है। क्षमा का भाव मन को हल्का करता है और संबंधों में फिर से मधुरता लाने का मार्ग खोलता है।

संवत्सरी की क्षमा केवल परिवार, मित्रों या परिचितों तक सीमित नहीं है। जैन धर्म का मूल आधार अहिंसा है। इसलिए इस पर्व पर समस्त जीव जगत के प्रति संवेदना का भाव रखा जाता है। मनुष्य से लेकर सूक्ष्म जीवों तक किसी को जाने-अनजाने कष्ट पहुंचा हो तो उसके प्रति भी क्षमाभाव प्रकट किया जाता है। हवा, पानी, वनस्पति, जीव-जंतु और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता जैन जीवनदर्शन की विशेष पहचान है। संवत्सरी इसी व्यापक करुणा और अहिंसा को जीवन में उतारने का संदेश देती है।

यह पर्व हमें यह भी सिखाता है कि क्षमा केवल शब्द नहीं, बल्कि जीवन का संस्कार बननी चाहिए। किसी से 'मिच्छामि दुक्कड़म' कहने के बाद यदि मन में वही क्रोध और वैर बना रहे तो संवत्सरी की भावना अधूरी रह जाती है। सच्ची क्षमा तब है जब हृदय से पुराने गिले-शिकवे समाप्त हों और संबंधों में नई शुरुआत की भावना पैदा हो। क्षमा मांगने में छोटापन नहीं, बल्कि आत्मबल और विनम्रता होती है। इसी तरह किसी की भूल को क्षमा कर देना भी महानता का परिचायक है।

आज के तनावपूर्ण और भागदौड़ भरे जीवन में संवत्सरी का संदेश और अधिक प्रासंगिक हो गया है। परिवारों में छोटी-छोटी बातों पर मतभेद, सामाजिक जीवन में प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत संबंधों में बढ़ती कटुता मनुष्य के भीतर अशांति पैदा कर रही है। ऐसे समय में संवत्सरी हमें ठहरकर स्वयं से प्रश्न करने की प्रेरणा देती है कि आखिर हम अपने भीतर कितना बोझ लेकर चल रहे हैं। यदि एक बार मन से अहंकार और द्वेष को हटाकर क्षमा का दीप जला दिया जाए तो जीवन में नई शांति का अनुभव किया जा सकता है।

संवत्सरी वास्तव में बाहर की सजावट का नहीं, भीतर के उजाले का पर्व है। दीपावली में दीपक घर को रोशन करता है, जबकि संवत्सरी का क्षमा दीप आत्मा को प्रकाशित करता है। तप से आत्मबल, त्याग से संयम, प्रतिक्रमण से आत्मबोध और क्षमा से मन की निर्मलता प्राप्त होती है। वर्षभर के पाप कर्मों, विवादों और मनमुटाव को हृदय से छोड़कर जब व्यक्ति सब जीवों से क्षमा मांगता है और सभी को क्षमा करता है, तभी संवत्सरी की साधना सार्थक होती है। यही इस पावन पर्व का सबसे बड़ा संदेश है कि मनुष्य अपने भीतर परिवर्तन लाए, अहिंसा और करुणा को अपनाए तथा क्षमा के माध्यम से अपने जीवन को अधिक शांत, सरल और निर्मल बनाए।

(वरिष्ठ पत्रकार साहित्यकार स्तम्भकार)

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अ निवार्य नहीं है)

कैंची काटती है, सुई जोड़ती है

कैंची काटती (तोड़ती) है और सुई जोड़ती है। यही कारण है कि तोड़ने वाली कैंची पैर के नीचे पड़ी रहती है और जोड़ने वाली सुई सिर पर स्थान पाती है। इसलिए मनुष्य का यही धर्म है कि इनसान को जोड़े न कि तोड़े। उन्होंने सास-बहू में एका होने का आह्वान भी किया। राष्ट्र संत तरुण सागर महाराज ने कई उदाहरणों के माध्यम से अपनी बातें रखीं। एक पिता अपने छोटे से पुत्र को विश्व का एक नक्शा देता है। फिर उसे टुकड़े-टुकड़े कर पुत्र को जोड़ने के लिए कहता है। पुत्र उस नक्शे को ज्यों का त्यों जोड़ देता है। अपने बेटे की प्रतिभा से आश्चर्यचकित पिता पूछता है कि बेटे तुमने यह असंभव कार्य कैसे कर लिया। बेटा कहता है कि पिताजी, नक्शा के पीछे इनसान बना हुआ था। मैंने इनसान को जोड़ा तो नक्शा भी ज्यों का त्यों जुड़ गया। मुनिश्री ने कहा कि इनसान को जोड़ने से पूरा विश्व एक हो सकता है। हे मानव 36 का आँकड़ा बहुत बना लिए, अब 63 का आँकड़ा बनाइए। बुजुर्गों के अनुभव का बखान करते हुए मुनिश्री ने कहा कि बुजुर्ग की एक-एक झुर्री पर एक-एक शास्त्र का ज्ञान लिखा होता है। बुजुर्ग की अवहेलना मत करिए। वे जो कह रहे हैं, उसे सुनो। उल्टा जवाब मत दो। जवाब दोगे तो घर का माहौल खराब हो जाएगा। झगड़ा, क्लेश व द्वेष फैलेगा। बुजुर्गों का सम्मान करना सीखो। आज जो बुजुर्गों के साथ करोगे, वहीं तुम्हारे साथ होगा।

रियल एस्टेट पर मंदी की दस्तक, मकान हैं, खरीदार गायब

(लेखक- सनत जैन)

भारत का रियल एस्टेट बाजार ऐसे दौर में पहुंच रहा है, जहां मांग, कीमत और आपूर्ति के बीच असंतुलन बढ़ता चला जा रहा है। जो आने वाले महीनों में एक बड़ी चुनौती बन सकता है। 2026 की दूसरी तिमाही में देश के सात प्रमुख शहरों में आवासीय बिक्री घटकर 90,715 इकाई रह गई। यह पिछली तिमाही से 11 फीसदी और एक साल पहले की समान अवधि से 6 फीसदी कम है। 2023 की शुरुआत के बाद का इसे सबसे कमजोर तिमाही प्रदर्शन बताया जा रहा है। वित्त वर्ष 2025-26 में कुल बिक्री करीब 4.04 लाख इकाई की रही, जो वित्त वर्ष 2022-23 के बाद से सबसे कम है। जिसके कारण अब रियल स्टेट को लेकर एक नई चिंता पैदा हो गई है। दूसरी तरफ तैयार और निर्माणाधीन मकानों का स्टॉक बढ़ता जा रहा है। शीर्ष सात शहरों में उपलब्ध आवासीय भवन और फ्लैट 2026 की दूसरी तिमाही के अंत तक करीब 10 फीसदी बढ़कर 6.16 लाख से अधिक इकाई हो गई है। समस्या केवल यह नहीं है, लोग मकान नहीं खरीद रहे हैं, बल्कि बिल्डरों ने जिस गति से नई परियोजनाएं शुरू की हैं, उस अनुपात में बिक्री नहीं हो रही है। बेंगलुरु इसका बड़ा उदाहरण है। 2026 की पहली तिमाही में वहां 26,297 नई आवास योजना इकाइयां लॉन्च हुईं, बिक्री केवल 16,745 इकाइयों की हुई। परिणामस्वरूप पूर्व और वर्तमान के बिना बिके आवासों की संख्या करीब 87,796 इकाइयों तक पहुंच गई है। हैदराबाद में भी पहली छमाही में बिक्री 13 फीसदी घटकर 26,068 इकाई रह गई है। बिना बिके मकानों का आंकड़ा 1.4 लाख से अधिक हो गया है। यह स्थिति इसलिए गंभीर है, रियल एस्टेट केवल बिल्डरों का कारोबार नहीं है, इसके पीछे बैंक, हाउसिंग फाइनेंस कंपनियां, एनबीएफसी, निवेशक, ठेकेदार और करोड़ों लोग इस रोजगार से जुड़े हैं। परियोजनाओं के लिए लिया गया कर्ज तब दबाव बन जाता है, जब बिक्री की रफ्तार धीमी हो। ऐसी स्थिति में बिल्डरों के ऊपर ब्याज लगातार बढ़ता जाता है। आवास की लागत बढ़ जाती है। मार्केट में डिमांड नहीं होने से कम मूल्य पर भी आवास नहीं बिक रहे हैं। बिल्डर वित्तीय संस्थानों और जिन लोगों ने आवास लेने के लिए ऋण लेकर पैसा निवेश किया है। सभी इससे प्रभावित हो रहे हैं। हालिया जानकारी के अनुसार प्रमुख डेवलपर्स पर कर्ज का बोझ बढ़ता चला जा रहा है। वित्त वर्ष 2025-26 में 21बड़ी कंपनियों में केवल तीन के पास परियोजना में खर्च करने के लिए पूंजी थी। बाकी बिल्डरों के पास परियोजना पूरी करने के लिए पैसा नहीं था। बैंकिंग क्षेत्र मे इस स्थिति को लेकर चिंता देखने को मिल रही है। आरबीआई के जून 2026 वित्तीय स्थिरता आकलन के अनुसार मार्च 2026 में बैंकों का सकल एनपीए अनुपात 1.8 प्रतिशत था। सामान्य परिस्थितियों में बैंकों का मानना है, मार्च 2028 तक इसका 1.9 प्रतिशत के आसपास रहने का अनुमान है, लेकिन जिस तरह की स्थिति तेजी के साथ बन रही है, उसके अनुसार आर्थिक विशेषज्ञों का मानना है, आर्थिक दबाव की स्थिति में यह अनुपात 3.8 से 4.1 फीसदी तक पहुंच सकता है।

यही सबसे बड़ा खतरा है। जिस तरह से बेरोजगारी बढ़ी है, कॉरपोरेट कंपनियां छटनी कर रही हैं। यदि वह अपना मकान अथवा फ्लैट बेचना चाहते हैं, ऐसी स्थिति में उन्हें वह कीमत भी नहीं मिल पा रही है, जो उन्हें बैंक में चुकाना है। जिसके कारण अब लोगों का रियल एस्टेट से जो भरोसा था हमेशा कीमतें बढ़ेगी। लोन चुकाने के लिए यदि वह अपने फ्लैट या मकान को बेचेंगे तो उन्हें अलग से कोई आर्थिक इंतजाम नहीं करना पड़ेगा। पिछले वर्षों में इसी कारण रियल स्टेट की मांग घटती चली जा रही है। मकानों की बिक्री लंबे समय तक कमजोर रहती है, तो बिल्डरों का नकदी प्रवाह, प्रभावित होगा। कर्ज चुकाने की क्षमता नहीं रहेगी। यह दबाव बैंकिंग क्षेत्र तक पहुंचने लगा है। इसलिए सरकार और आरबीआई को नई परियोजनाओं को ऋण देने के स्थान पर जो संपत्तियां अभी नहीं बिकी हैं, उन पर प्रोत्साहन देने की जरूरत है। डेवलपर के कर्ज, वास्तविक आवासीय मांग, पर भी नजर रखनी होगी। चीन के रियल सेक्टर में भारी मंदी देखने को मिल रही है।

यहां पर 20 से लेकर 40 फ़ीसदी तक की गिरावट है। मकान के लिए लोगों ने भारी कर्ज लिया था, लेकिन वह अपने वेतन से कर्ज नहीं चुका पा रहे हैं। अचानक नौकरियां जा रही हैं, जिसके कारण उन्हें मकान बेचना पड़ता है। जितने में उन्होंने मकान खरीदा था, उससे आधी कीमत भी नहीं मिल पा रही है। इस स्थिति के कारण अब आवास के लिए कर्ज लेने वालों की संख्या तेजी के साथ घट रही है। वहीं निवेश करने वालों ने भी अपने हाथ खींच लिए हैं। संपत्ति का जितना मूल्य है उसके हिसाब से किराया बहुत कम मिल रहा है। पिछले दो दशक में रियल स्टेट का जो बूम आया था, अब वह मंदी की चपेट में आ गया है। रियल एस्टेट में असली सुधार तभी माना जाएगा, जब आवास की कीमतें आम लोगों की आय के अनुरूप हों। नौकरी जाने पर वह अपना मकान होल्ड कर सकें। रियल एस्टेट की परियोजनाओं में बिक्री और आपूर्ति में संतुलन बने। तैयार मकानों की बिक्री हो, ताकि उनमें रख-रखाव का खर्च खत्म हो। चमकदार टावरों और मीडिया के विज्ञापनों के पीछे खड़ी लाखों खाली संपत्तियां भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए बड़ी वित्तीय चुनौती बन गई है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

मोबाइल पर जीएसटी 5 प्रतिशतकरने की मांग

नई दिल्ली ।

मोबाइल फोन और उससे जुड़े कारोबार पर जीएसटी की दर घटाकर 5 फीसदी करने की मांग तेज हो गई है। मोबाइल उद्योग से जुड़े कारोबारियों और उपभोक्ता संगठनों का कहना है, मोबाइल अब विलासिता की वस्तु नहीं, बल्कि शिक्षा, रोजगार, डिजिटल भुगतान और सरकारी सेवाओं तक पहुंचने का जरूरी माध्यम है। मौजूदा जीएसटी दर ज्यादा होने के कारण फोन की कीमत बढ़ती है। निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के उपभोक्ताओं पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है। उद्योग का तर्क है कि जीएसटी घटाने से मोबाइल की बिक्री बढ़ सकती है। डिजिटल अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी, कर आधार भी बढ़ सकता है। कारोबारियों ने सरकार से आगामी जीएसटी परिषद की बैठक में इस प्रस्ताव पर विचार करने की मांग की है।

टाटा समूह की कंपनियों के शेयर में तेजी

टाटा केमिकल्स का शेयर 20 प्रतिशत चढ़ा

नई दिल्ली ।

टाटा समूह की कंपनियों के शेयर में मंगलवार को तेजी रही। टाटा केमिकल्स का शेयर 20 प्रतिशत चढ़ गया। भारतीय रिजर्व बैंक के टाटा संस के प्रमुख निवेश कंपनी का पंजीकरण वापस करने के आवेदन को खारिज करने की खबरों के बीच यह तेजी आई है। बीएसई पर टाटा केमिकल्स के शेयर में 20 प्रतिशत की तेजी आई। टाटा इन्वेस्टमेंट कॉरपोरेशन का शेयर 15.24 प्रतिशत, टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल्स का 5.89 प्रतिशत, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का 5.47 प्रतिशत, टाटा एल्क्सी का 4.28 प्रतिशत, टाटा पावर का 3.41 प्रतिशत, टाटा कम्युनिकेशंस का 3.21 प्रतिशत, टाटा स्टील का 1.96 प्रतिशत और टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स का 1.72 प्रतिशत चढ़ा। सूत्रों ने शनिवार को बताया था कि भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने टाटा संस के प्रमुख निवेश कंपनी के रूप में एनबीएफसी पंजीकरण वापस लेने के आवेदन को खारिज कर दिया है। इससे टाटा समूह की होल्डिंग कंपनी के लिए शेयर बाजार में सूचीबद्ध होने की राह खुल गई है।

सोना 115 रुपए गिरा, चांदी 461 रुपए टूटी

सोना 1,51,181 रुपए प्रति 10 ग्राम, चांदी 2,32,200 रुपए प्रति किलोग्राम

नई दिल्ली ।

अमेरिकी में ब्याज दर बढ़ने की आशंका और बॉन्ड यील्ड में तेजी के कारण सोने की कीमतों पर दबाव बढ़ गया है। मंगलवार को अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना पांच सप्ताह के निचले स्तर के करीब आ गया, जिससे घरेलू और वैश्विक दोनों बाजारों में कीमती धातुओं के भाव नरम पड़ गए। अंतरराष्ट्रीय बाजार कॉमेक्स पर सोना 4,349.40 डॉलर प्रति औंस पर 2.50 डॉलर की गिरावट के साथ कारोबार कर रहा था। वहीं, चांदी भी 64.01 डॉलर प्रति औंस पर 0.12 डॉलर नीचे लुढ़क गई। यह गिरावट वैश्विक निवेशकों के बीच बढ़ती चिंताओं का परिणाम है। घरेलू बाजार एमसीएक्स पर भी शुरुआती कारोबार में सोने और चांदी के वायदा भाव नरम रहे। खबर लिखे जाने तक, सोने का अक्टूबर वायदा भाव 1,51,181 रुपए प्रति 10 ग्राम पर 49 रुपए की गिरावट दिखा रहा था, जबकि यह 115 रुपए की गिरावट के साथ खुला था। इसी तरह चांदी का दिसंबर वायदा भाव 2,32,200 रुपए प्रति किलोग्राम पर 490 रुपए की कमजोरी के साथ कारोबार कर रहा था। चांदी का दिसंबर कॉन्ट्रैक्ट 461 रुपए की गिरावट के साथ 2,31,569 रुपए पर खुला था। यह लगातार दबाव बताता है कि बाजार अमेरिकी आर्थिक नीतियों के संभावित प्रभावों को लेकर सतर्क है, जिससे सुरक्षित निवेश मानी जाने वाली धातुओं की चमक फीकी पड़ रही है।

प्रणव कंस्ट्रक्शंस का शेयर 33 फीसदी बढ़त के साथ सूचीबद्ध

नई दिल्ली । रियल एस्टेट कंपनी प्रणव कंस्ट्रक्शंस लिमिटेड का शेयर अपने 124 रुपये के निर्गम मूल्य से 33 प्रतिशत की बढ़त के साथ मंगलवार को बाजार में सूचीबद्ध हुआ। बीएसई पर शेयर ने निर्गम मूल्य से 30.64 प्रतिशत की बढ़त के साथ 162 रुपये पर कारोबार शुरू किया। एनएसई पर यह 33 प्रतिशत की बढ़त के साथ 165 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ। कंपनी का बाजार मूल्यांकन 1,520.97 करोड़ रुपये रहा।प्रणव कंस्ट्रक्शंस के 351 करोड़ रुपये के आईपीओ को पिछले सप्ताह बुधवार को बोली के अंतिम दिन 121 गुना अभिदान मिला था। आईपीओ का मूल्य दायरा 118-124 रुपये प्रति शेयर था। प्रणव कंस्ट्रक्शंस लिमिटेड ने बड़े (एंकर) निवेशकों से 84.24 करोड़ रुपये जुटाए थे।

रूस प्रतिबंध विधेयक पर अमेरिकी संसद में घमासान!

हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स में 'लिंडसे ओ. ग्राहम एक्ट' पर संशोधन

नई दिल्ली ।

अमेरिकी कांग्रेस में रूस पर प्रतिबंध लगाने वाले एक महत्वपूर्ण विधेयक को लेकर घमासान मचा हुआ है। प्रतिनिधि सभा में इस विधेयक में ऐसे संशोधन पेश किए गए हैं, जो भारत सहित रूस के प्रमुख व्यापारिक साझेदारों पर टैरिफ लगाने या फिर इस प्रावधान को पूरी तरह हटाने की मांग करते हैं। यह विधेयक यूक्रेन युद्ध के लिए रूस को मिलने वाली वित्तीय सहायता को बाधित करने का लक्ष्य रखता है, लेकिन इसके माध्यमिक प्रतिबंधों को लेकर गहरे मतभेद उभर आए हैं। लिंडसे ओ. ग्राहम सैंक्शनिंग रूस एंड ईरान एक्ट नामक यह विधेयक पिछले महीने अमेरिकी सीनेट से 86-11 के भारी बहुमत से पारित हो चुका है। इसका उद्देश्य रूस के नेतृत्व, ऊर्जा क्षेत्र और उसके शैडो फ्लीट पर प्रतिबंध लगाकर यूक्रेन के खिलाफ युद्ध के लिए मॉस्को को मिल रही आर्थिक मदद को रोकना है। विधेयक में अमेरिकी राष्ट्रपति को रूस के कच्चे तेल के प्रमुख खरीदार देशों पर 100 प्रतिशत टैरिफ लगाने का अधिकार देने का भी प्रस्ताव है, हालांकि सीनेट से पारित विधेयक में इन देशों के नाम स्पष्ट रूप से नहीं दिए गए थे। अब राष्ट्रपति के हस्ताक्षर से पहले इसे प्रतिनिधि सभा से पारित होना है, जिसके पास 3 नवंबर के मध्यावधि चुनाव से पहले केवल चार कार्यदिवस बचे हैं। इसी बीच प्रतिनिधि सभा में दो मुख्य संशोधन चर्चा का विषय बने हुए हैं। डेमोक्रेटिक सांसद स्टेनी होयर ने एक संशोधन पेश किया है, जिसमें चीन, भारत, तुर्किये और यूएई सहित 10 देशों को उन व्यापारिक साझेदारों के रूप में स्पष्ट रूप से नामित करने का प्रस्ताव है, जिन पर प्रस्तावित 100 प्रतिशत शुल्क लगाया जा सकता है। इसका अर्थ है कि रूस से तेल कारोबार करने वाले ये देश विधेयक में प्रस्तावित माध्यमिक टैरिफ के दायरे में आ जाएंगे। इसके विपरीत, डेमोक्रेटिक सांसद ग्रेगरी मीक्स ने एक अलग संशोधन पेश किया है, जिसमें राष्ट्रपति को अतिरिक्त टैरिफ लगाने का अधिकार देने वाले पूरे प्रावधान (धारा 113) को हटाने की मांग की गई है। मीक्स इस तरह के व्यापक माध्यमिक टैरिफ के मुखर विरोधी हैं और उन्हें तीन अन्य सांसदों का समर्थन भी मिला है। मीक्स ने एक अन्य संशोधन में राष्ट्रपति को राष्ट्रीय सुरक्षा के आधार पर 90 दिनों की प्रतिबंध छूट देने का अधिकार भी सुझाया है। यह द्वंद दिखाता है कि अमेरिका रूस को दंडित करने की अपनी रणनीति में सहयोगी देशों पर पड़ने वाले प्रभावों को लेकर बंटा हुआ है।

एयर इंडिया को मिला नया सीईओ, टेवोल्डे गेब्रेमरियम संभालेंगे कमान

निदेशक मंडल ने कैंपबेल विल्सन को दी विदाई

मुंबई ।

एयर इंडिया के निदेशक मंडल ने मंगलवार को मुंबई में हुई अपनी महत्वपूर्ण बैठक में कंपनी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) के पद पर बदलाव को अंतिम रूप दे दिया है। इथियोपियन एयरलाइंस समूह के पूर्व प्रमुख टेवोल्डे गेब्रेमरियम इस महीने के अंत में औपचारिक रूप से यह पद संभालेंगे, जबकि वर्तमान सीईओ कैंपबेल विल्सन इस महीने अपने पद से हट जाएंगे। टाटा संस के चेयरमैन एन. चंद्रशेखरन की अध्यक्षता में हुई बैठक में नए सीईओ के वेतन ढांचे सहित विभिन्न रणनीतिक मुद्दों पर चर्चा हुई। निदेशक मंडल ने जुलाई 2022 से एयरलाइन की महत्वाकांक्षी परिवर्तन योजना का सफल नेतृत्व करने के लिए विल्सन के योगदान के लिए उनका धन्यवाद किया। टेवोल्डे गेब्रेमरियम विमानन उद्योग में लगभग चार दशकों का व्यापक अनुभव रखते हैं, जिसमें इथियोपियन एयरलाइंस समूह में 11 साल से अधिक समय तक सीईओ का पद संभालना शामिल है।

उन्हें एयर इंडिया के चल रहे कायापलट के लिए एक महत्वपूर्ण नियुक्ति माना जा रहा है। इस बीच, एयर इंडिया अपनी ग्राहक सेवा प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने के लिए सेल्सफोर्स के एआई मंच का उपयोग बढ़ा रही है। इसमें ईमेल का स्वचालित समाधान, नाम बदलने की प्रक्रियाओं का सरलीकरण और ग्राहक सेवा टीमों के लिए कृत्रिम मेधा (एआई) आधारित ज्ञान सहायक शामिल हैं। कंपनी ने 140 से अधिक उद्यम प्रणालियों को जोड़ने वाला क्लाउड आधारित डिजिटल तंत्र विकसित किया है और 30 से अधिक एआई पहलें जारी हैं।

हिंदुस्तान जिंक- युवा इंजीनियरों की बदौलत बदल रहा भारतीय जिंक उद्योग का भविष्य

उदयपुर ।

इंजीनियर्स डे के मौके अवसर पर, विश्व की सबसे बड़ी एकीकृत जिंक उत्पादक कंपनी हिंदुस्तान जिंक ने अपने युवा इंजीनियरों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया है, जो भारत के मेटल और माइनिंग उद्योग को एक नई दिशा दे रहे हैं। कंपनी के कुल अधिकारियों में 57.8 प्रतिशत इंजीनियरिंग पृष्ठभूमि से हैं, जिनमें से 76 प्रतिशत युवा पेशेवर कोर इंजीनियरिंग क्षेत्रों से जुड़े हैं। विशेष रूप से, लगभग 10 प्रतिशत नेतृत्वकर्ता 35 वर्ष से कम आयु के हैं। यह युवा पीढ़ी अपने तकनीकी ज्ञान, डिजिटल कौशल, नवाचार और सतत विकास की सोच के साथ उद्योग को अधिक आधुनिक, स्मार्ट और सुरक्षित बना रही है।पारंपरिक धारणाओं से परे जाकर, ये इंजीनियर केवल उद्योग का हिस्सा नहीं बन रहे बल्कि इसके भविष्य को भी आकार दे रहे हैं। हिंदुस्तान जिंक की अत्याधुनिक इकाइयों में रिमोट ब्लास्टिंग, टेली-रिमोट मशीन संचालन, रियल-टाइम मॉनिटरिंग सिस्टम और ऑटोमेटेड प्रक्रियाओं जैसी तकनीकों के माध्यम से, युवा इंजीनियर सुरक्षित व कुशल कार्यप्रणाली विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

कंपनी के कुल 2,685 अधिकारियों के कार्यबल में से 1,551 कर्मचारी इंजीनियरिंग पृष्ठभूमि से हैं। महिला अधिकारियों की संख्या 20.5 प्रतिशत है, जो माइनिंग, मेटलर्जी, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल और पर्यावरण इंजीनियरिंग जैसे विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। हिंदुस्तान जिंक युवा प्रतिभाओं को लगातार जोड़ रहा है, जिसके तहत वित्त वर्ष 2025-26 में 335 कैंपस हायरिंग की गई है। हिंदुस्तान जिंक के सीईओ एवं पूर्णकालिक निदेशक अमरेंदु प्रकाश ने कहा, आज के इंजीनियर तेजी से बदलते उद्योग में कदम रख रहे हैं। हिंदुस्तान जिंक में हम देख रहे हैं कि युवा इंजीनियर नई सोच और दृष्टिकोण के साथ जटिल चुनौतियों का समाधान खोज रहे हैं। हमारी जिम्मेदारी है कि हम उन्हें ऐसा वातावरण दें जहाँ उनकी जिज्ञासा और तकनीकी क्षमता नवाचार में बदल सके।कंपनी का 62 प्रतिशत से अधिक कार्यबल 35 वर्ष से कम आयु का है और इसमें लैंगिक विविधता अनुपात 26.3 प्रतिशत है। हिंदुस्तान जिंक एक ऐसा कार्यस्थल विकसित कर रहा है जहाँ युवा प्रतिभाओं को जिम्मेदारी, सीखने के अवसर और नवाचार की स्वतंत्रता मिलती है। डिजिटलाइजेशन के इस दौर में, कंपनी बड़े औद्योगिक वातावरण के भीतर स्टार्टअप जैसी कार्य संस्कृति को बढ़ावा दे रही है। अधिकारियों के अलावा, 423 से अधिक गैर-अधिकारी कर्मचारी भी इंजीनियरिंग प्रक्रियाओं को मजबूत बनाते हैं, जो परिचालन की मजबूत नींव हैं।

एफसीएनआर (बी) जमा पर बैंकों को अतिरिक्त लागत, ब्याज हेजिंग से बढ़ेगा बोझ

आरबीआई द्वारा मूल राशि की ही हेजिंग से 15-20 आधार अंक की बढ़ोतरी

नई दिल्ली ।

भारतीय बैंकों को विदेशी मुद्रा अनिवासी (बैंक) यानी एफसीएनआर (बी) जमा पर 15-20 आधार अंक की अतिरिक्त लागत झेलनी पड़ेगी। यह बढ़ोतरी जमाकर्ताओं को दिए जाने वाले ब्याज के हेजिंग के मद में होगी, क्योंकि भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) केवल मूल जमा राशि की हेजिंग कर रहा है, ब्याज की नहीं। यह लागत जमाकर्ताओं को दिए जाने वाले ब्याज के अलावा होगी।

बैंक अधिकारियों के अनुसार, बैंकों को इन जमाओं पर डॉलर में ब्याज देना होता है, जिससे भविष्य में डॉलर की देनदारी बनती है। इस ब्याज वाले हिस्से की हेजिंग का खर्च बैंकों को खुद उठाना होगा, जो करेंसी फॉरवर्ड प्रीमियम और दोनों मुद्राओं के बीच ब्याज दरों के अंतर पर निर्भर करता है। आरबीआई की रियायती अदला-बदला व्यवस्था के तहत बैंकों ने एफसीएनआर (बी) जमा से 127 अरब डॉलर जुटाए थे, जो सुविधा 31 अगस्त को बंद हो गई है। एक सरकारी बैंक के वरिष्ठ बैंकर ने बताया कि ब्याज वाले हिस्से पर हेजिंग की लागत बैंकों को उठानी होगी।

निजी क्षेत्र के एक अधिकारी ने पुष्टि की कि हेजिंग की लागत जोड़ने के बाद एफसीएनआर (बी) जमा की प्रभावी लागत लगभग 15-20 आधार अंक बढ़ जाएगी। उदाहरण के लिए, 6.5 फीसदी ब्याज दर प्रभावी रूप से 6.65 से 6.70 फीसदी हो जाएगी। हालांकि, बैंक अधिकारियों का मानना है कि 3-5 साल की इन जमाओं पर 6.5 से 7.0 फीसदी की तय लागत पर भी रकम जुटाना अभी भी फायदेमंद है।

बैंक भविष्य की डॉलर देनदारी के जोखिम को कम करने के लिए फॉरवर्ड जैसे विकल्पों पर विचार कर रहे हैं, हालांकि आरबीआई के स्वैप के कारण प्रीमियम बढ़ गए हैं। अनुमान है कि ब्याज का हिस्सा 20 अरब डॉलर तक हो सकता है, जिसके प्रबंधन के लिए फॉरवर्ड अहम जरिया होंगे।

आरबीआई ने बाजार से खींची 3.93 लाख करोड़ की नकदी

अधिशेष तरलता को नियंत्रित करने और दरों को स्थिर करने की कवायद जारी

मुंबई । भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने मंगलवार को एक परिवर्तनीय दर रिवर्स रेपो (वीआरआरआर) नीलामी के जरिए बैंकिंग प्रणाली से 3,93,352 करोड़ रुपये की अतिरिक्त नकदी जुटाई। यह केंद्रीय बैंक की अधिशेष तरलता को सोखने और मुद्रा बाजार की रातोंरात दरों को रेपो दर के अनुरूप लाने की जारी कवायद का हिस्सा है। केंद्रीय बैंक ने 5 लाख करोड़ रुपये की अधिसूचित राशि के मुकाबले प्राप्त बोलियों को 5.24 प्रतिशत की कट-ऑफ दर पर स्वीकार किया। आरबीआई पिछले एक महीने से इस तरह की नीलामी कर रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य बैंकिंग प्रणाली में अनुमानित 10.73 लाख करोड़ रुपये (11 सितंबर तक) की अतिरिक्त नकदी को प्रबंधित करना है। इस प्रयास के तहत, आरबीआई ने हाल ही में 1 लाख करोड़ रुपये की सरकारी प्रतिभूतियों की बिक्री के लिए खुले बाजार परिचालन (ओएमओ) की भी घोषणा की है, जिसकी पहली नीलामी 17 सितंबर को होनी है। यह कदम बाजार में तरलता के स्तर को संतुलित करने के आरबीआई के दृढ़ संकल्प को दर्शाता है।

'अमेजन नाउ' की भारत में सालाना बिक्री एक अरब डॉलर के पार

हर तिमाही में दोगुने हुए ऑर्डर, दिवाली तक 100 शहरों में विस्तार की योजना

नई दिल्ली ।

भारत में अमेज़न की त्वरित वाणिज्य सेवा अमेज़न नाउ ने एक बड़ी उपलब्धि हासिल करते हुए अपनी सालाना अनुमानित सकल बिक्री (एजीएमवी) को 1 अरब अमेरिकी डॉलर के आंकड़े तक पहुंचा दिया है। कंपनी के इतिहास में यह सबसे तेज़ी से बढ़ने वाली ई-कॉमर्स इकाई बन गई है, जहां सेवा शुरू होने के बाद से हर तिमाही में इसके ऑर्डर दोगुने हो रहे हैं। अमेज़न इंडिया के एक अे धिकारी ने मंगलवार को इस सफलता की घोषणा करते हुए बताया कि अमेज़न नाउ की यह रिकॉर्ड तोड़ वृद्धि पिछले तीन महीनों की बिक्री गति पर आधारित है। ग्राहकों की ज़बरदस्त प्रतिक्रिया से उत्साहित कंपनी अब दिवाली तक इस सेवा का विस्तार 100 शहरों तक करने की राह पर है। यह उसकी देशभर के 300 से अधिक शहरों तक पहुंचने की व्यापक योजना का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि कम समय में इतनी बड़ी उपलब्धि हासिल करना ग्राहकों के बीच अमेज़न नाउ की बढ़ती लोकप्रियता और आवश्यकता को दर्शाता है। पिछले 10 हफ्तों से भी कम समय में, अमेज़न नाउ ने अपनी पहुंच को चार गुना से अधिक शहरों में बढ़ाया है, जिससे त्योहारों से पहले 60 से ज़्यादा शहरों और कस्बों में ग्राहकों को कुछ ही मिनटों में उत्पाद आपूर्ति की सुविधा मिल रही है। यह तीव्र विस्तार और रिकॉर्ड तोड़ बिक्री अमेज़न की भारतीय बाज़ार में त्वरित वाणिज्य की क्षमता पर भरोसे को मज़बूत करती है।

कोटक-एचडीएफसी ने लॉन्च किए इंडेक्स फंड

म्युचुअल फंड में निवेश का नया द्वार, दोनों ओपन-एंडेड एनएफओ का लक्ष्य बाजार खंडों को ट्रैक करना

नई दिल्ली ।

म्युचुअल फंड में निवेश की तलाश कर रहे निवेशकों के लिए दो प्रमुख फंड हाउस, कोटक महिंद्रा म्युचुअल फंड और एचडीएफसी म्युचुअल फंड, ने हाल ही में अपने न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) लॉन्च किए हैं। ये दोनों ही ओपन-एंडेड इंडेक्स फंड हैं, लेकिन इनका निवेश फोकस अलग-अलग बाजार खंडों पर है - एक पूंजी बाजार से जुड़ी कंपनियों को ट्रैक करेगा, तो दूसरा रियल एस्टेट और आरईआईटी क्षेत्र पर केंद्रित है। कोटक निफ्टी कैपिटल मार्केट्स इंडेक्स फंड- यह फंड कैपिटल मार्केट से जुड़ी कंपनियों वाले इंडेक्स को ट्रैक करेगा, जिसका लक्ष्य लॉन्ग टर्म में पूंजी वृद्धि करना है। इसमें निवेशक न्यूनतम 1,000 रुपए (एकमुश्त) से निवेश शुरू कर सकते हैं, जबकि एसआईपी के लिए न्यूनतम 500 रुपए की दो किस्तें आवश्यक हैं। इस फंड में कोई एग्जिट लोड नहीं है। कोटक के इस एनएफओ में निवेश 15 सितंबर, 2026 से 29 सितंबर, 2026 तक किया जा सकता है। इसका बेंचमार्क निफ्टी कैपिटल मार्केट्स इंडेक्स टीआरआई है। एचडीएफसी बीएसई आरईआईटीएस एंड कमर्शियल रियल एस्टेट इंडेक्स फंड- यह फंड रियल एस्टेट और कमर्शियल रियल एस्टेट से जुड़ी कंपनियों के इंडेक्स को ट्रैक करेगा, जिसका उद्देश्य भी लॉन्ग टर्म में पूंजी बढ़ाना है। इसमें न्यूनतम 100 रुपए से निवेश शुरू किया जा सकता है। इस एनएफओ में निवेश 15 सितंबर, 2026 से 17 सितंबर, 2026 तक किया जा सकेगा। इसमें आवंटन की तारीख से तीन महीने के भीतर यूनिट्स रिडीम करने पर 0.50 फीसदी का एग्जिट लोड लगेगा, जिसके बाद कोई शुल्क नहीं लगेगा। इसका बेंचमार्क बीएसई आरईआईटीएस एंड कमर्शियल रियल एस्टेट इंडेक्स टीआरआई है।दोनों ही फंड पैसिव निवेश रणनीति अपनाएंगे और अपने-अपने बेंचमार्क इंडेक्स (कोटक के लिए निफ्टी कैपिटल मार्केट्स इंडेक्स टीआरआई और एचडीएफसी के लिए बीएसई आरईआईटीएस एंड कमर्शियल रियल एस्टेट इंडेक्स टीआरआई) में शामिल सिक्योरिटीज में अपनी कुल एसेट का 95 से 100 फीसदी हिस्सा निवेश करेंगे।

कंपनियों ने बढ़ाए दाम, फिर शुरू हुआ छूट का खेल

कार में 1 लाख से लेकर 3 लाख तक की छूट

मुंबई ।

सितंबर में टाटा मोटर्स ने कारों की कीमतों में 25 हजार रुपये तक की बढ़ोतरी की। मारुति सुजुकी ने भी चुनिंदा मॉडलों पर 20 हजार रुपये तक की कीमत बढ़ाने की घोषणा की। कंपनियों ने इसके पीछे बढ़ती उत्पादन लागत और महंगाई को कारण बताया। इसके बाद ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए छूट और एक्सचेंज ऑफर का सहारा लिया जा रहा है।

किस कंपनी के कितने लाभ?

टाटा मोटर्स- कर्व और नेक्सन सहित कई मॉडलों पर छूट और अन्य लाभ दिए जा रहे हैं। कर्व पर 1.25 लाख रुपये तक के लाभ की घोषणा की है।

महिंद्रा- विभिन्न मॉडलों पर डीलर स्तर पर ऑफर उपलब्ध हैं। सभी मॉडलों के लिएअलग-अलग छूट दी गई है।

होंडा- एलिवेट पर 1.79 लाख रुपये तक और सिटी पर 1.30 लाख रुपये तक के लाभ उपलब्ध हैं। इनमें नकद छूट, एक्सचेंज बोनस और कॉरपोरेट लाभ को अलग-अलग शामिल किया गया है।

मारुति सुजुकी- विक्टोरिस के स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड मॉडल पर 1.35 लाख रुपये तक के लाभ की घोषणा की गई है। स्विफ्ट, वैगनार और अन्य कारों पर भी ऑफर हैं।

हुंडई- इसके विभिन्न मॉडलों पर डीलर और कंपनी की योजनाओं के अनुसार छूट मिल सकती है। वास्तविक राशि मॉडल, स्टॉक और स्थान पर निर्भर है।

डीलरों और ग्राहकों में छूट को लेकर तनातनी

ग्राहकों का आरोप है कि कंपनियां पहले कीमतें बढ़ाती हैं। बाद में बड़ी छूट का प्रचार करके खरीदारी का माहौल बनाती हैं। दूसरी ओर, डीलरों का कहना है, छूट में कंपनी का योगदान, एक्सचेंज बोनस, स्क्रैपेज लाभ और डीलर की अतिरिक्त रियायत अलग-अलग होती है। इसलिए विज्ञापन में बताई गई अधिकतम छूट हर ग्राहक को नकद रूप में नहीं मिलती है ।ऑटोमोबाइल क्षेत्र के जानकारों के अनुसार, पुराने स्टॉक को निकालना, नए मॉडल के लिए जगह बनाना और बिक्री बढ़ाना छूट योजनाओं के प्रमुख कारण हो सकते हैं। ग्राहकों को खरीदारी से पहले पुरानी और नई एक्स-शोरूम कीमत, बीमा, एक्सेसरीज तथा ऑन-रोड कीमत की लिखित जानकारी देना चाहिए। इससे वास्तविक बचत का पता चलेगा. भ्रामक छूट के दावों से बचा जा सकेगा। ग्राहकों के हितों को देखते हुए यह जरूरी भी है।

टाटा संस पर आईपीओ का दबाव, आरबीआई ने अर्जी ठुकराई

निजी से सार्वजनिक कंपनी बनने सहित कई कानूनी व ढांचागत तैयारी करनी होगी

नई दिल्ली ।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने टाटा संस की प्रमुख निवेश कंपनी (सीआईसी) का दर्जा खत्म करने की अर्जी नामंजूर कर दी है। इस फैसले के बाद अब टाटा संस के लिए शेयर बाजार में सूचीबद्ध होना लगभग अनिवार्य हो गया है, जिससे समूह पर आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) की तैयारी तेज करने का दबाव बढ़ गया है। हालांकि, मौजूदा कानूनी और ढांचागत बाधाओं को देखते हुए यह राह आसान नहीं होगी। विशेषज्ञों के अनुसार टाटा संस को आईपीओ लाने से पहले कई महत्वपूर्ण कानूनी और ढांचागत तैयारियां करनी होंगी। 2017 में कंपनी एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी बन गई थी, जिसके आर्टिकल्स ऑफ एसोसिएशन में शेयर हस्तांतरण पर ऐसी पाबंदियां हैं, जो सार्वजनिक सूचीबद्धता के नियमों के अनुकूल नहीं हैं। एक लॉयर्स ऐंड कंसल्टेंट्स के पार्टनर बताते हैं कि इन बुनियादी शर्तों को पूरा करने के लिए बोर्ड को विशेष प्रस्ताव पारित कर कंपनी को फिर से सार्वजनिक बनाना होगा और प्रतिबंधों वाले नियमों को हटाना होगा। सिंघानिया ऐंड कंपनी के रोहित जैन के मुताबिक, टाटा ट्रस्ट्स की नियंत्रक स्थिति और उससे जुड़ी शासन व्यवस्था की जांच डिस्क्लोजर और संबंधित पक्षकार लेनदेन के संदर्भ में जरूरी होगी। टाटा ट्रस्ट्स, जो टाटा संस में 66 फीसदी हिस्सेदारी के साथ सबसे बड़े शेयरधारक हैं, की नियंत्रण स्थिति को बनाए रखते हुए न्यूनतम सार्वजनिक शेयरधारिता (एमपीएस) की शर्त को पूरा करना एक चुनौती होगी। संभावना है कि नए शेयर जारी करने के बजाय मौजूदा शेयरधारकों द्वारा ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) का रास्ता अपनाया जाएगा। शापूरजी पलोनजी समूह, जिसके पास लगभग 18.4 फीसदी हिस्सेदारी है और जो लंबे समय से सूचीबद्धता की मांग कर रहा है, ओएफएस के लिए एक स्वाभाविक दावेदार माना जा रहा है। इससे टाटा संस ट्रस्ट्स की पकड़ ढीली किए बिना नियमों का पालन कर सकेगा। टाटा संस की तात्कालिक प्राथमिकता आरबीआई से आईपीओ टाइमलाइन के बारे में स्पष्ट जानकारी लेना और एक विस्तृत रोडमैप तैयार करना होगी।

मेटा अब सीधे भारतीय एजेंसी को देगा डेटा

मजबूत सुरक्षा और जवाबदेही पर सरकार का जोर

नई दिल्ली ।

ऑनलाइन बाल यौन शोषण (सीएसएएम) और अन्य हानिकारक सामग्री के खिलाफ सरकार की कड़ी सख्ती के बीच, सोशल मीडिया दिग्गज मेटा ने बाल सुरक्षा से जुड़े मामलों की जानकारी सीधे भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी) द्वारा संचालित साइबर अपराध मंच को देने पर सहमति जताई है।

यह कदम मेटा को भारत में कानून प्रवर्तन एजेंसियों को सीधे जानकारी देने की प्रतिबद्धता जताने वाली पहली बड़ी प्रौद्योगिकी मध्यस्थ कंपनी बनाता है। केंद्र सरकार लंबे समय से सोशल मीडिया मंचों पर मजबूत सुरक्षा उपाय और अधिक जवाबदेही सुनिश्चित करने पर जोर दे रही है। मेटा के प्रवक्ता ने बच्चों की सुरक्षा को प्राथमिकता बताया और अपराधियों की जवाबदेही तय करने के लिए सरकार के साथ काम करने की प्रतिबद्धता जताई। पहले मेटा यह जानकारी अमेरिका स्थित एक केंद्र को देता था, लेकिन अब यह व्यवस्था भारत केंद्रित होगी, जिससे त्वरित कार्रवाई में आसानी होगी। सरकारी सूत्रों ने स्पष्ट किया है कि भारत में बच्चों की ऑनलाइन सुरक्षा मूलभूत सिद्धांत है, जिस पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता। सरकार उन मंचों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की चेतावनी भी दे चुकी है जो नाबालिगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में विफल रहते हैं। हाल ही में, सरकार ने सीएसएएम और डीपफेक जैसी सामग्री पर अंकुश लगाने के तरीके को लेकर मेटा को नोटिस जारी किया था और उनके वैश्विक अधिकारियों को तलब भी किया था।

यह मेटा की प्रतिबद्धता बच्चों के लिए मंचों को सुरक्षित बनाने की दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम है। सरकार का कहना है कि अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है, और सभी मंचों से ऐसी हानिकारक सामग्री की सक्रिय रूप से पहचान कर उसे हटाने की अपेक्षा है। भारतीय कानून का पालन न करने पर सरकार कड़ी चेतावनी दे चुकी है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

भाजपा नेता मिथुन ने शुरू की 'बंगाल फुटबॉल एकेडमी' बनाने की पहल

कोलकाता। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता मिथुन चक्रवर्ती ने 'बंगाल फुटबॉल एकेडमी' बनाने की पहल फिर से शुरू की है, जिसकी कोशिश करीब 15 साल से जारी है। सोमवार को उन्होंने न्यू टाउन में पूर्व फुटबॉलर्स के साथ एकेडमी की योजना पर चर्चा की। मिथुन चक्रवर्ती की योजना प्रत्येक जिले से प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को लाना है। वह पहाड़ी इलाकों पर भी फोकस करेंगे। उनकी योजना शुरुआत में 60 फुटबॉलर्स के साथ एकेडमी शुरू करना है। इसके साथ ही दिग्गज अभिनेता मिथुन ने एकेडमी के वित्तीय योजना के बारे में भी बताया। मीडिया के साथ बातचीत में मिथुन चक्रवर्ती ने कहा, 'बीते 15 वर्षों से कुछ हुआ नहीं, क्योंकि मैं शामिल था। मेरा नाम आते ही सब कुछ बैन कर दिया गया। कोई मैदान, कोई

फील्ड कुछ नहीं दिया गया... बोल के भी नहीं दिया। इसलिए 15 साल से ये ठप्प पड़ा हुआ था, लेकिन हम लोगों ने एक करोड़ रुपए जमा करके रखे हैं, जो अभी भी बैंक में हैं। अभी इस एकेडमी को चलाने के लिए, इसको ताकत देने के लिए और दो-तीन करोड़ रुपए मैं चंदे से जुटाउंगा, ताकि बंगाल फुटबॉल एकेडमी अच्छी तरह से चल सके। ' उन्होंने कहा, 'हम लोग अभी डिस्ट्रिक्ट में लोगों को भेजेंगे। सब जगह से अच्छे खिलाड़ियों को चुनेंगे।

हम 60 खिलाड़ियों को चुनेंगे, जिसमें से आदिवासी खिलाड़ियों पर मेरी ज्यादा नजर है। पहाड़ी इलाकों में, दार्जिलिंग, कालिम्पोंग ये सब जगह हिल्स एरिया में जो लड़के अच्छा खेलते हैं, उनके ऊपर मेरी ज्यादा नजर है। हमने चार-पांच ग्राउंड सोच रखे हैं। टेंडर के जरिए हमें जो मिलेगा, हम उसी में काम करेंगे। '

चेक गणराज्य फुटबॉल टीम के पूर्व गोलकीपर लुडेक मिकलोस्को का निधन

नई दिल्ली। वेस्ट हैम, क्यूपीआर और चेक गणराज्य फुटबॉल टीम के पूर्व गोलकीपर लुडेक मिकलोस्को का लंबी और गंभीर बीमारी से जूझने के बाद 64 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। मिकलोस्को वेस्ट हैम फुटबॉल क्लब के दिग्गज खिलाड़ी थे। उन्होंने इंग्लिश प्रीमियर लीग क्लब के लिए 300 से ज्यादा मैच खेले। 2021 में उन्हें कैंसर का पता चला था और दिसंबर 2024 में उन्होंने इलाज बंद कर दिया था। वेस्ट हैम ने मिकलोस्को को श्रद्धांजलि दी, जिन्हें 1990-91 में क्लब का 'हैमर ऑफ द ईयर' चुना गया था। वेस्ट हैम ने एक बयान में कहा, 'बहुत गहरे दुख के साथ वेस्ट हैम यूनाइटेड

दिग्गज पूर्व गोलकीपर और कोच लुडेक मिकलोस्को के निधन की घोषणा करता है। लुडेक, आप शांति से सोएं; आप हमारे प्यारे, प्रेरणादायक गोलकीपर और एक नेक और बड़े दिल वाले इंसान थे।' वहीं, उनके बेटे मार्टिन मिकलोस्को ने वेस्ट हैम के प्रति अपने पिता के प्यार का जिक्र किया। मार्टिन ने कहा, 'कैंसर से बहादुरी और हिम्मत के साथ लड़ने के बाद मेरे पिता लुडेक के निधन की खबर देते हुए हमारा दिल टूट गया है। डैड को वेस्ट हैम यूनाइटेड से बहुत प्यार था, और उन्हें खास तौर पर हर मैच में अपना नाम जोर-शोर और गर्व के साथ गाए जाते हुए सुनना बहुत पसंद था। क्लब और उसके प्रशंसक हमारे परिवार का हिस्सा थे और हमेशा रहेंगे, इसलिए आप सभी का दिल से शुक्रिया। '

संक्षिप्त समाचार

एटीपी रैंकिंग

जोकोविच सात पायदान नीचे खिसके, 24 साल बाद पहली बार 'टॉप 10' से 'बिग 3' नदारद

नई दिल्ली। यूएस ओपन के पहले ही राउंड में नोवाक जोकोविच को चौंकाने वाली हार का सामना करना पड़ा, जिसके बाद सोमवार को जारी एटीपी रैंकिंग में वह 'टॉप 10 से बाहर होकर 12वें स्थान पर खिसक गए। जोकोविच को पहले ही राउंड में अर्जेंटीना के मारियानो नावोन के हाथों शिकस्त मिली थी। अक्टूबर 2002 के बाद ऐसा पहली बार

है, जब 'बिग थ्री' (जोकोविच, राफेल नडाल और रोजर फेडरर) में से कोई भी एटीपी रैंकिंग के 'टॉप-10' में शामिल नहीं है। 20 बार के ग्रैंड स्लैम विजेता फेडरर ने साल 2022 में संन्यास लिया था, जबकि 22 बार के मेजर विजेता नडाल ने 2024 में खेल को अलविदा कह दिया था। 24 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन जोकोविच 39 साल की उम्र में भी खेल रहे हैं और उन्हें अपने 25वें मेजर खिताब की उम्मीद है, जिससे वे मार्गरेट कोर्ट के 24 खिताबों के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ देंगे। हालांकि, 25वें खिताब की उनकी हालिया कोशिश तब खत्म हो गई जब मारियानो नावोन के खिलाफ मैच के दौरान उन्हें शारीरिक परेशानी और उल्टी हुई। न्यूयॉर्क में हार के बाद जोकोविच ने कहा, 'मुझे अतीत की सभी उपलब्धियों पर बहुत गर्व है, लेकिन अब जो है, सो है। यह स्पष्ट था कि कोर्ट पर मुझे बहुत खराब महसूस हो रहा था।

विश्व की नंबर एक महिला खिलाड़ी बनीं रिबाकिना, खत्म की सबालेंका की बादशाहत

नई दिल्ली। सोमवार को जारी साप्ताहिक डब्ल्यूटीए रैंकिंग में बेलारूस की एरीना सबालेंका से आगे निकलने के बाद एलेना रिबाकिना आधिकारिक तौर पर विश्व की नई नंबर एक महिला टेनिस खिलाड़ी बन गई हैं। हाल ही में खत्म हुए यूएस ओपन क्वार्टर फाइनल में किनवेन झेंग को हराने के बाद ही रिबाकिना का टॉप स्पॉट पक्का हो गया था। कजाकिस्तान की स्टार खिलाड़ी ने फाइनल में सबालेंका को हराकर इस टूर्नामेंट का समापन किया। रिबाकिना सिंगल्स रैंकिंग में वर्ल्ड नंबर 1 बनने वाली कजाकिस्तान की पहली (पुरुष या

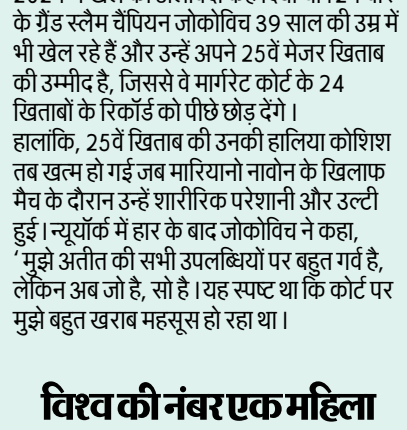

महिला) खिलाड़ी बन गई हैं। पूरे सीजन में शानदार प्रदर्शन के कारण वह सबालेंका के काफी करीब बनी रहीं, जबकि बेलारूसी टेनिस स्टार का फॉर्म सीजन के बीच में थोड़ा गिर गया था। जहां सीजन के बीच में सबालेंका की लय बिगड़ी, वहीं रिबाकिना पिछले साल के आखिर से ही टॉप पर पहुंचने की ओर बढ़ रही थीं। उन्होंने इस साल सीजन के बीच में नॉर्थ अमेरिकन हार्ड-कोर्ट स्विंग पर शानदार प्रदर्शन किया और उसके बाद 'बिग एप्पल' (न्यूयॉर्क) में भी सफलता हासिल की। नंबर 1 पोजीशन पक्का होने पर रिबाकिना ने प्रतिक्रिया दी थी। डब्ल्यूटीए के अनुसार, रिबाकिना ने कहा, 'यह इतिहास है, और मुझे कजाकिस्तान का प्रतिनिधित्व करने पर बहुत गर्व है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं प्रोफेशनल बनूंगी या इतने बड़े मंचों पर इस तरह के टूर्नामेंट खेलूंगी।'

ज्वेरेव ने जीता यूएस ओपन

फाइनल में बेन शेल्टन को दी शिकस्त

न्यूयॉर्क । अलेक्जेंडर ज्वेरेव ने यूएस ओपन 2026 के पुरुष सिंगल्स फाइनल में अमेरिकी बेन शेल्टन को 6-3, 7-6(2), 5-7, 6-2 से हराकर अपना दूसरा ग्रैंड स्लैम खिताब और साल का दूसरा मेजर खिताब जीता। तीन घंटे 33 मिनट तक चले इस मुकाबले में जीत हासिल करने के बाद ज्वेरेव ने एटीपी लाइव रेस टू ट्यूरिन में अपनी बढ़त और मजबूत कर ली है। अब वह सिनर से 700 अंक आगे हैं। यह रैंकिंग बताती है कि साल के अंत में एटीपी का नंबर एक खिलाड़ी कौन बनेगा। ज्वेरेव अपना छठा ग्रैंड स्लैम फाइनल और इस साल का तीसरा फाइनल खेल रहे थे, जबकि शेल्टन अपने करियर में पहले कभी इस स्टेज तक नहीं पहुंचे थे। जर्मनी के स्टार खिलाड़ी ज्वेरेव इस साल शानदार फॉर्म में रहे हैं। मेजर टूर्नामेंट्स में उनका रिकॉर्ड 25 जीत और सिर्फ 2 हार का रहा है। उन्होंने इस साल केवल दो खिताब जीते हैं, लेकिन दोनों ग्रैंड स्लैम ट्रॉफियां हैं। इसी वजह से वे साल के अंत में दुनिया के नंबर 1 खिलाड़ी बनने की दौड़ में मजबूती से बने हुए हैं। अपनी जीत के बाद ज्वेरेव ने अपनी मां को खास तौर पर याद किया और बताया कि ग्रैंड स्लैम न जीत पाना उनके सामने आई सबसे बड़ी मुश्किल नहीं थी। ज्वेरेव ने कहा, 'जब आपके 4 साल के बेटे को डायबिटीज का पता चलता है और डॉक्टर आपको बताते हैं कि उस बच्चे की जिंदगी और खेल बहुत सीमित हो जाएंगे, तो उन डॉक्टरों के केबिन से बाहर निकलकर यह कहना कि 'मेरा बेटा जो चाहेगा, वही बनेगा' – इसके लिए एक बहुत ही मजबूत मां की जरूरत होती है। '

उन्होंने आगे कहा, 'अगर वह टेनिस खिलाड़ी बनना चाहता है, तो वह टेनिस खिलाड़ी बनेगा। अगर वह कुछ और करना चाहता है, तो वह कुछ और करेगा। मगर यह बीमारी हमारी पहचान तय नहीं करेगी। मुझे खुशी है कि हमने इससे मिलकर मुकाबला किया, और हम अभी जो कुछ भी कर रहे हैं, वह कर पा रहे हैं। '

शेल्टन 23 साल पहले यूएस ओपन में एंडी रॉडिक के बाद मेजर खिताब जीतने वाले पहले अमेरिकी पुरुष खिलाड़ी बनने की कोशिश कर रहे थे। हालांकि, वह नंबर 1 सीड खिलाड़ी को नहीं हरा पाए। यह अमेरिकी खिलाड़ी 1975 में आर्थर ऐश के बाद इस स्तर पर जीत हासिल करने वाले दूसरे अफ्रीकी-अमेरिकी पुरुष बनने की कोशिश कर रहे थे। अपने पहले ग्रैंड स्लैम फाइनल में हार के बावजूद 23 वर्षीय शेल्टन का प्रदर्शन शानदार रहा। उन्होंने क्वार्टर फाइनल में मौजूदा चैंपियन कार्लोस अल्काराज को हराया था। इस शानदार अभियान के दम पर वह एटीपी रैंकिंग में अपने करियर की सबसे बेहतरीन चौथी रैंकिंग पर पहुंच जाएंगे।

धीरज बोम्मादेवरा ने रचा इतिहास

तीरंदाजी विश्व कप फाइनल जीतने वाले बने पहले भारतीय पुरुष खिलाड़ी

साल्टिलो (मेक्सिको) । जयंत तालुकदार के विश्व कप फाइनल में पदक जीतने के 16 साल बाद भारत को पुरुष रिकर्व वर्ग में फिर से बड़ी सफलता मिली है। धीरज बोम्मादेवरा ने बेहद दबाव भरे शूट-ऑफ में शानदार संयम दिखाते हुए जीत हासिल की। इसके साथ ही वह तीरंदाजी विश्व कप फाइनल का खिताब जीतने वाले पहले भारतीय पुरुष तीरंदाज बन गए हैं। दुनिया के नंबर 10 तीरंदाज और सेना के 25 वर्षीय खिलाड़ी धीरज ने साल्टिलो में हुए रोमांचक फाइनल में जापान के नाकानिशी जुन्या को 6-5 से हराया। पांच सेट के बाद मुकाबला 5-5 से बराबरी पर था, जिसके बाद शूट-ऑफ में धीरज ने 10 का स्कोर किया, जबकि नाकानिशी ने 9 का स्कोर किया और धीरज ने गोल्ड मेडल अपने नाम करने में सफल रहे।

यह सफलता धीरज के लिए और भी खास रही, क्योंकि पिछले दो तीरंदाजी विश्व कप फाइनल में वह पदक नहीं जीत पाए थे। 2023 और 2024 में उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ा था। हालांकि, इस बार उन्होंने नॉकआउट मुकाबलों में शानदार खेल दिखाया और फाइनल में दुनिया के 20वें नंबर के तीरंदाज नाकानिशी का सामना किया।

फाइनल में कोई भी तीरंदाज हार मानने को तैयार नहीं था। पांच सेटों में स्कोर 28-28, 28-29, 29-28, 28-30 और 28-27 रहा, जिससे गोल्ड मेडल का फैसला बहुत कम अंतर से हुआ। धीरज की जीत ने इस प्रतिष्ठित सीजन-एंडिंग इवेंट में भारत का रिकॉर्ड भी बदल दिया। तालुकदार ने पहले 2010 में एडिनबर्ग में ब्रॉन्ज मेडल जीता था, लेकिन टूर्नामेंट की शुरुआत से अब तक कोई भी भारतीय पुरुष गोल्ड मेडल नहीं जीत पाया था।

भारत की एकमात्र अन्य व्यक्तिगत विश्व कप फाइनल चैंपियन डोला बनर्जी हैं, जिन्होंने 2007 में दुबई में महिलाओं का खिताब जीता था।

खिताबी जीत के बाद क्रांति गौड़ पर आईसीसी ने लगाया जुर्माना

दुबई। भारत ने रविवार को श्रीलंका के खिलाफ विमेंस एशिया कप 2026 का फाइनल 72 रन से अपने नाम किया, लेकिन इस जीत के दौरान आईसीसी आचार संहिता के लेवल 1 के उल्लंघन के लिए भारतीय तेज गेंदबाज क्रांति गौड़ पर मैच फीस का 10 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) ने सोमवार को बताया कि क्रांति गौड़ ने खिलाड़ियों की आचार संहिता के अनुच्छेद 2.5 का उल्लंघन किया है, जिसमें ऐसी भाषा, हरकत या इशारे शामिल हैं जो किसी बल्लेबाज के आउट होने पर उनका अपमान करते हैं या आक्रामक प्रतिक्रिया भड़का सकते हैं। यह घटना श्रीलंका की पारी के शुरुआती ओवर की है, जब क्रांति ने ओपनर इमेशा दुलानी को बोल्ड करने के बाद पवेलियन की ओर इशारा किया। मैच फीस में कटौती के अलावा, क्रांति के अनुशासनात्मक रिकॉर्ड में एक डिमेरिट प्वाइंट भी जोड़ा गया। यह 24 महीने की अवधि में उनका पहला अपराध था।

क्रांति पर यह आरोप ऑन-फील्ड अंपायर सलीमा इम्तियाज और शथिरा जाकिर जेसी ने आरोप लगाए थे। इसमें थर्ड अंपायर रोकेया सुल्ताना और चौथे अंपायर हुमैरा फराह भी शामिल थीं, जिसके बाद आईसीसी इंटरनेशनल पैनल की मैच रेफरी सुप्रिया रानी दास ने यह सजा दी।

क्रांति ने आरोप स्वीकारते करते हुए सजा मान ली, जिससे औपचारिक सुनवाई की जरूरत नहीं पड़ी। आईसीसी के नियमों के तहत, लेवल 1 के अपराधों के लिए खिलाड़ी की मैच फीस का अधिकतम 50 प्रतिशत जुर्माना और दो तक डिमेरिट प्वाइंट्स दिए जा सकते हैं।

एक अलग फैसले में, शुक्रवार को श्रीलंका के हाथों सेमीफाइनल में हार के दौरान धीमी ओवर-रेट बनाए रखने के लिए पाकिस्तान पर मैच फीस का पांच प्रतिशत जुर्माना लगाया गया, क्योंकि समय की छूट को ध्यान में रखने के बाद भी वे अपने लक्ष्य से एक ओवर पीछे पाए गए। आईसीसी कोड ऑफ कंडक्ट के आर्टिकल 2.22 के तहत, अगर कोई टीम तय समय में अपने ओवर पूरे नहीं कर पाती, तो खिलाड़ियों की मैच फीस का 5 प्रतिशत हिस्सा हर ओवर के लिए काट लिया जाता है। पाकिस्तानी कप्तान फातिमा सना ने अपनी गलती मानते हुए सजा स्वीकार कर ली है।

विमेंस एशिया कप के साथ भारत ने 'एशियन गेम्स' के लिए भी बेहतरीन तैयारी की: देवजीत सैकिया

नई दिल्ली। भारतीय टीम ने रविवार को दुबई में खेले गए 'विमेंस एशिया कप 2026' के फाइनल में श्रीलंका को 72 रन से रौंदकर रिकॉर्ड 8वीं बार खिताब जीता। 'विमेन इन ब्लू' के प्रदर्शन से भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के अध्यक्ष देवजीत सैकिया बहुत खुश हैं। उनका मानना है कि इस टूर्नामेंट के साथ भारत ने एशियन गेम्स की शानदार तैयारी की है। सैकिया ने सोमवार को पत्रकारों से कहा, 'भारतीय महिला टीम ने काफी अच्छा प्रदर्शन किया है। भारत के सभी मैच एकतरफा रहे हैं। एशिया कप के साथ भारतीय टीम ने एशियन गेम्स 2026 के लिए भी बेहतरीन तैयारी की है। मैं टीम और सपोर्ट स्टाफ को बधाई देता हूं। हमारी यही कोशिश रहेगी कि जीत के इस सिलसिले को जापान (एशियन गेम्स) तक ले जाएं।' सैकिया ने भारतीय महिला क्रिकेट टीम की सफलता का श्रेय बोर्ड के पूर्व सचिव जय शाह को देते हुए कहा, 'जय शाह ने महिला क्रिकेट को बढ़ावा दिया है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

अध्यात्मिक पर्वः पर्यूषण पर्व

(मुनि विशोक सागर)

जो जीवन में मंगलमय दिन लाए, पतित जीवन को मंगलमयी कर दे, एवं आत्मा को पुनीत पावन बनाए वह है पर्व। आत्मसृजन का माध्यम है-पर्व। आत्मा को श्रृंगारित करने वाला है पर्व। पामर से परमात्मा एवं नर से नारायण बनाने की कला सिखाता है पर्व। हैवान को इंसान एवं दानव को मानव बनाने वाला है पर्व।

पर्यूषण अर्थात- परि : आ समन्तात उष्यन्ते दह यन्ते पाप कर्माणि यस्मिन् तत् पर्यूषणम। जो सर्वताः पाप कर्मो को जलाता है, वह है पर्यूषण। पर्यूषण पर्व सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सार्व देशिक है। यह पर्व किसी व्यक्ति विशेष या घटना विशेष से संबन्धित न होकर प्राणी मात्र के पवित्र गुणों से संबंधित है। इसलिए यह पर्व सार्वभौमिक है। कोई काल ऐसा नहीं जब क्रोधादि को हेय और उत्तम क्षमादि भावो को उपादेय न माना गया हो। अर्थात सर्वकालों में इसकी उपयोगिता - उपादेयता असंदिग्ध है। जैन धर्म में इस पर्व को सर्वोत्तम स्थान प्राप्त है। यह शाश्वत पर्वो में गिना जाता है। इस पर्व में आत्म निरीक्षण, आत्मा परीक्षण और आत्मा विकास के लिए नई नई प्रेरणाएँ मिलती हैं। यह पर्व आत्मोत्थान एवं जीवनोत्कर्ष के लिए अमोध अस्त्र है।

मानव में मानवता एवं इंसान में इंसानियत को डालने वाला होता है पर्व। जीवन को सुगंधित करने वाला होता है पर्व। पर्व जीवन में मम यानि अहंकार को गलाने वाला होता है। जीवन गहन अज्ञान अंधकार से भरा है। और उस अंधकार की घोर तसिस्रा में आलोक पाने के लिए, जलते हुए दस दीपक आपके समक्ष आ रहे हैं। ये मिट्टी के दीपक नहीं हैं। ये रत्न दीपक हैं। रत्न दीपक सतत् ज्योतित रहते हैं। उसका प्रकाश कभी मंद नहीं पडता। ज्योति कभी निष्प्रभ नहीं होती। चाहे कितनी भी आँधी, तूफान या वर्षा आए लेकिन रत्न दीपक की ज्योति - शिखा सदैव उर्ध्वगामी रहती है। अर्थात अलौकिक अक्षुण्ण कांति उत्त दीपकों से अहर्निश निकलती रहती है। पर्यूषण पर्व जिसे दसलक्षण पर्व भी कहते हैं, आत्मा के दस धर्मो के रहस्य को उद् घाटित करने वाला है - दसलक्षण पर्व से क्षमादि दस ऐसे दीप हैं, जो हमारे सिर्फ बाहरी अंधकार को ही नहीं, अपितु अंतरंग - अंधकार को समाप्त कर देते हैं। ये दस दिन हमारे जीवन को जीवंत बनाने वाले होते हैं। दसलक्षण पर्व के प्रत्येक दिन, हमारे जीवन के लिए, नई-नई उपलब्धियों को प्रदान करने वाले होते हैं। इन दिनों में आप अपनी आत्मा को अवलोकन करें। वैसे यह पर्व सिर्फ दस दिन के लिए नहीं समूचे जीवन के लिए है। आप लोगों ने अपनी सुविधानुसार दस दिन नियत कर लिए हैं। जब कोई व्यक्ति गर्मी की तपन से व्याकुल होने लगता है तो सांझ के समय छत पर छहलना चाहता है ताकि शीतल हवा के मायम से थोड़ी मन को शांति मिल सके। इस तरह जब व्यक्ति दुखो की तीव्र तपन से तपने लगता है, तब वह बचने के लिए धर्म की शरण में आता है। छत पर पहुँचने के लिए जिस प्रकार सीढियो की आवश्यकता पडती है, उसी प्रकार धर्म- का शाश्वत रूप समझने के लिए धर्मरूपी अमृत का पान करने के लिए इन दस सीढ़ियों का आरोहण किए बिना कोई मनुष्य मुक्ति के 5 महाद्वार तक नहीं पहुँच सकता। पर्यूषण पर्व वर्ष में तीन बार आते हैं। माघ, चैत्र और भाद्रपद लेकिन व्यक्ति भाद्रपद में ही क्यों मनाते है? इसका भी एक सांसारिक कारण है कि भाद्रपद में धंधा मंदा चलता है, फ्री रहते हैं और फुर्सत में पर्व मना लेते हैं।

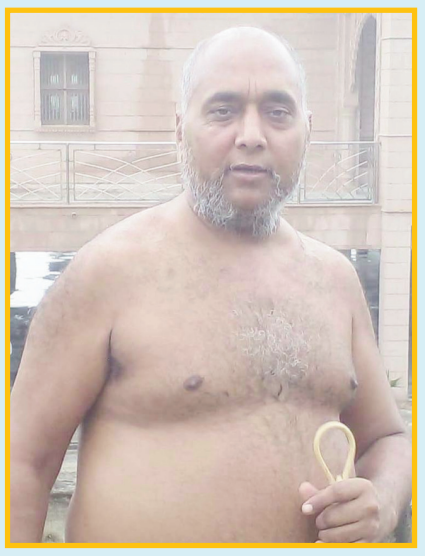

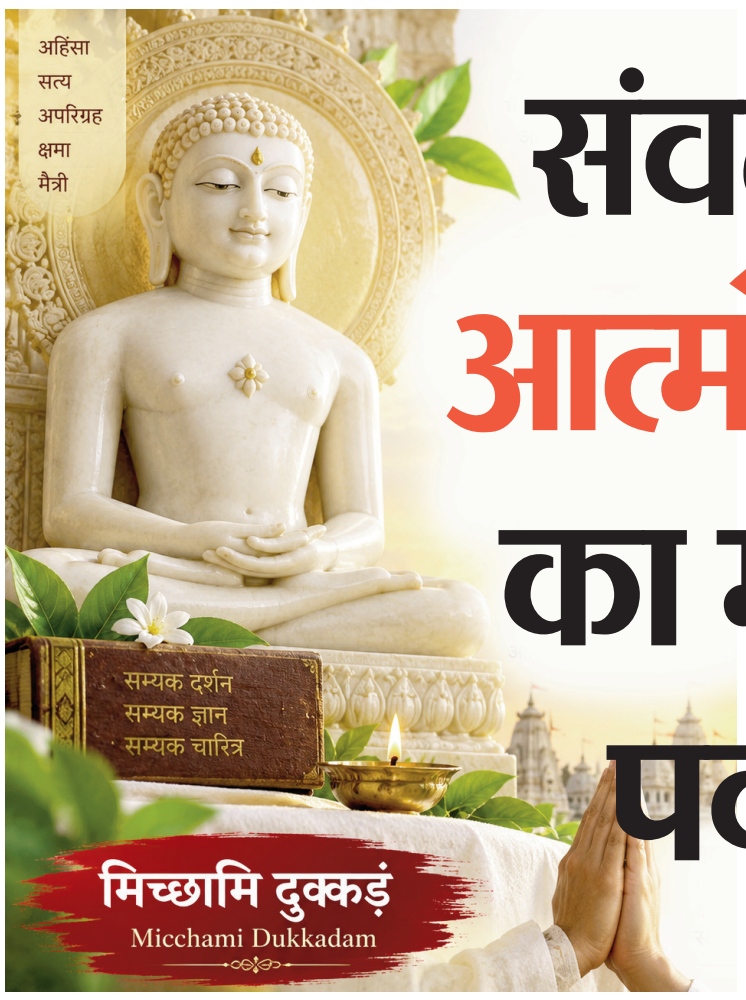

संवत्सरी आत्मोत्थान का महान पर्व है

आचार्य डॉ. लोकेशमुनि-आध्यात्मिक यात्रा बुक

जैन धर्म में संवत्सरी महापर्व का अत्यधिक विशिष्ट महत्व है। वर्ष भर में अपने द्वारा जान अनजाने हुई समस्त भूलों के लिए प्रायश्चित करना तथा दूसरों के प्रति हुए अशिष्ट व्यवहार के लिए अंतःकरण से अत्यन्त सरल, ऋजु व पवित्र बनकर क्षमा माँगना व दूसरों को प्रदान करना इस महान पर्व का हार्द है।

भगवान महावीर ने कहा 'क्षमा वीरों का आभूषण है'- महान व्यक्ति ही क्षमा ले व दे सकते हैं। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर भी कहते है- 'क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो, उसको क्या जो दंतहीन,विषहीन विनीत सरल हो' सामर्थ्य होने के बावजूद किसी को नुकसान नहीं पहुँचाना व भूलों के लिए क्षमा करना ही महानता है।

संवत्सरी शुद्ध रूप से आध्यात्मिक पर्व है। यह आत्म-चिंतन आत्म-निरीक्षण, आत्म-मंथन व आत्म शोधन का पर्व है। यह भाद्रपद महीने में मनाया जाता है। संवत्सरी महा पर्व मनाने के लिए आगम साहित्य में इसके लिए उल्लेख मिलता है कि संवत्सरी चातुर्मास के 49 या 50 दिन व्यतीत होने पर व 69 या 70 दिन अवशिष्ट रहने पर मनाई जानी चाहिए।

जैन धर्म की त्याग प्रधान संस्कृति में संवत्सरी पर्व का अपना अपूर्व एवं विशिष्ट आध्यात्मिक महत्व है। यह एकमात्र आत्मशुद्धि का पर्व है, इसीलिए यह पर्व ही नहीं, महापर्व है। जैन लोगों का सर्वमान्य विशिष्टतम पर्व है। संवत्सरी पर्व- त्याग तपस्या, ध्यान, मौन, जप, स्वाध्याय आदि अनेक प्रकार के अनुष्ठानों के द्वारा मनाया जाता है। संवत्सरी अंतरात्मा की आराधना का पर्व है, आत्मशोधन का पर्व है, सोना तपकर निर्खाद बनता है इंसान तपकर भगवान बनता है। यह पर्व अज्ञानरूपी अंधकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर ले जाता है।

तप जप ध्यान स्वाध्याय के द्वारा क्रोध, मान, माया, लोभ,राग, द्वेष आदि आंतरिक शत्रुओं का नाश होगा तभी आत्मा अपने स्वरूप में अवस्थित होगी अतः यह आत्मा का आत्मा में निवास करने की प्रेरणा देता है।

संवत्सरी महापर्व आध्यात्मिक पर्व है, इसका जो केंद्रीय तत्व है, वह है- आत्मा। आत्मा के निरामय, ज्योतिर्मय स्वरूप को प्रकट करने में यह महापर्व अहं भूमिका निभाता है। अध्यात्म यानी आत्मा की सन्निकटता। यह संवत्सरी पर्व मानव-मानव को जोड़ने व मानव हृदय को संशोधित करने का महान पर्व है।जिसे त्याग-प्रत्याख्यान, उपवास, पौषध सामायिक, स्वाध्याय और संयम से मनाया जाता है।

वर्षभर में कभी समय नहीं निकाल पाने वाले लोग भी इस दिन जागृत हो जाते हैं। कभी उपवास नहीं करने वाले भी इस दिन धर्मानुष्ठान करते नजर आते हैं।

संवत्सरी महापर्व कषाय शमन का पर्व है। यह पर्व 8 दिनों तक मनाया जाता है जिसमें किसी के भीतर में ताप, उत्ताप पैदा हो गया हो, किसी के प्रति राग-द्वेष की भावना पैदा हो गई हो तो यह उसको शांत करने का पर्व है। संवत्सरी पर्व आदान-प्रदान का पर्व है। इस दिन सभी अपनी मन की उलझी हुई ग्रंथियों को सुलझाते हैं, अपने भीतर की राग-द्वेष की गांठों को खोलते हैं, वे एक- दूसरे से गले मिलते हैं। पूर्व में हुई भूलों को क्षमा द्वारा समाप्त करते हैं व जीवन को पवित्र बनाते हैं।

संवत्सरी महापर्व का समापन क्षमावाणी (मैत्री दिवस) के रूप में आयोजित होता है जिसे क्षमापना दिवस भी कहा जाता है। इस तरह से संवत्सरी महापर्व एवं क्षमापना दिवस- ये एक-दूसरे को निकटता में लाने का पर्व है। ये एक-दूसरे को अपने ही समान समझने का पर्व है। गीता में भी कहा है- 'आत्मौपम्येन सर्वत्रः, समे पश्यति योर्जुन'। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा- 'हे अर्जुन! प्राणीमात्र को अपने तुल्य समझो।'

भगवान महावीर ने कहा- 'मित्ती में सव्व भूएसु, वेरंमज्झण केणइ'। सभी प्राणियों के साथ मेरी मैत्री है, किसी के साथ वैर नहीं है।

मानवीय एकता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, मैत्री, शोषणविहीन सामाजिकता, अंतरराष्ट्रीय नैतिक मूल्यों की स्थापना, अहिंसक जीवन आत्मा की उपासना शैली का समर्थन आदि तत्व संवत्सरी महापर्व के मुख्य आधार हैं।

संवत्सरी पर्व प्रतिक्रमण का प्रयोग है। पीछे मुड़कर स्वयं को देखने का ईमानदार प्रयत्न है। आत्मशोधन व आत्मोत्थान का पर्व है। यह पर्व अहंकार और ममकार के विसर्जन करने का पर्व है। यह पर्व अहिंसा की आराधना का पर्व है। आज पूरे विश्व को सबसे ज्यादा जरूरत है अहिंसा की, मैत्री की। यह पर्व अहिंसा और मैत्री का पर्व है। देश और दुनिया में समय-समय पर रह-रहकर सांप्रदायिक हिंसा और आतंकवादी घटनाएँ ऐसा वीभत्स एवं तांडव नृत्य करती रही हैं, जिससे संपूर्ण मानवता प्रकंपित हो जाती है। इनदिनों काश्मीर में वहां की जनता की सक्रिय भागीदारी से बौखलाए आतंकवादी अपनी गतिविधियों में तेजी लाते हुए वहां हिंसा का माहौल निर्मित कर रहे हैं, अहिंसा की एक बड़ी प्रयोग भूमि भारत में आज साम्प्रदायिक-आतंकवाद की यह आग- खून, आगजनी एवं लाशों की ऐसी कहानी गढ़ रही है, जिससे घना अंधकार छा रहा है। चहूँ ओर भय, अस्थिरता एवं अराजकता का माहौल बना हुआ है। भगवान महावीर हो या गौतम बुद्ध, स्वामी विवेकानंद हो या महात्मा गांधी- समय-समय पर ऐसे अनेक महापुरुषों ने अपने क्रांत चिंतन के द्वारा समाज का समुचित पथदर्शन किया। ऐसे समय में संवत्सरी महापर्व की प्रासंगिकता सहज ही बहुगुणित हो गयी है।

आज देश में गहरे हुए घावों को सहलाने के लिए, निस्तेज हुई मानवता को पुनर्जीवित करने एवं इंसानियत की ब्यार को प्रवहमान करने के लिए अहिंसक समाज रचना की अपेक्षा है जो मनुष्य जीवन के बेमानी होते अर्थों में नए जीवन का संचार कर सकें। अहिंसा विश्व भारती इसी उद्देश्य को साकार करने के लिये कृतसंकल्प है।

अहिंसा और मैत्री द्वारा ही शांति मिल सकती है। आज जो हिंसा, आतंक, आपसी-द्वेष, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार जैसी ज्वलंत समस्याएं न केवल देश के लिए बल्कि दुनिया के लिए चिंता का बड़ा कारण बनी हुई हैं और सभी कोई इन समस्याओं का समाधान चाहते हैं। उन लोगों के लिए संवत्सरी पर्व एक प्रेरणा है।

संवत्सरी महापर्व अहिंसा के मूल्यों को पल्लवित एवं पोषित करने का अवसर है। सारे मानवीय-मूल्य अहिंसा की आबोहवा में पल्लवित, विकसित होते हैं एवं जिन्दा रहते हैं। वस्तुतः अहिंसा मनुष्यता की प्राण-वायु (ऑक्सीजन) है। प्रकृति, पर्यावरण, पृथ्वी, पानी और प्राणीमात्र की रक्षा करने वाली अहिंसा ही है। हम अहिंसा का मार्ग नहीं अपनाते हैं तब प्रकृति अपना काम करती है। इसलिए संवत्सरी एक ऐसा अवसर है जो हमें महाविनाश से महानिर्माण की ओर अग्रसर करके जीवन निर्माण की प्रेरणा देता है।

आत्मा का पर्व है पर्युषण

मनुष्य उत्सव प्रिय होता है। पर्व-त्योहारों का तात्पर्य सिर्फ पकवानों का ही स्वाद नहीं, बल्कि परस्पर सौहार्द की वृद्धि भी होता है। चाहे दशहरा हो या दीपावली, क्रिसमस हो या लोहड़ी, ओणम हो या वैशाखी, गुड़ी पड़वा हो या नवरात्र, गुरु पूर्णिमा हो या पर्युषण पर्व -ये सभी पारस्परिक, सामाजिक संबंधों को रेखांकित करते हैं, उन्हें और मजबूत बनाते हैं। जैन धर्म में सबसे उत्तम पर्व है पर्युषण। यह सभी पर्वों का राजा है। इसे आत्मशोधन का पर्व भी कहा गया है, जिसमें तप कर कर्मों की निर्जरा कर अपनी काया को निर्मल बनाया जा सकता है। पर्युषण पर्व को आध्यात्मिक दीवाली की भी संज्ञा दी गई है। जिस तरह दीवाली पर व्यापारी अपने संपूर्ण वर्ष का आय-व्यय का पूरा हिसाब करते हैं, गृहस्थ अपने घरों की साफ- सफाई करते हैं, ठीक उसी तरह पर्युषण पर्व के आने पर जैन धर्म को मानने वाले लोग अपने वर्ष भर के पुण्य पाप का पूरा हिसाब करते हैं। वे अपनी आत्मा पर लगे कर्म रूपी मैल की साफ-सफाई करते हैं। पर्युषण आत्म जागरण का संदेश देता है और हमारी सोई हुई आत्मा को जगाता है। यह आत्मा द्वारा आत्मा को पहचानने की शक्ति देता है। इस दौरान व्यक्ति की संपूर्ण शक्तियां जग जाती हैं। इन दिनों साधु वर्ग के लिए पांच विशेष कर्तव्य बताए गए हैं -संवत्सरी, प्रतिक्रमण, केशलोचन, यथाशक्ति तपश्चर्या, आलोचना और क्षमायाचना। इसी तरह गृहस्थों (श्रावकों) के लिए भी कुछ विशेष कर्तव्य बताए गए हैं। इनमें मुख्य हैं -शास्त्रों का श्रवण, यथाशक्ति तप, अभयदान, सुपात्र दान, ब्रह्मचर्य का पालन, आरंभ स्मारक का त्याग, संघ की सेवा और क्षमा याचना। इसके अलावा आलस्य तथा प्रमाद का परित्याग करके धर्म आराधना और उपासना के लिए तत्पर बने रहना ही पर्युषण पर्व का मुख्य संदेश है। पर्युषण एक क्षमा पर्व भी है। यह हमें क्षमा मांगने और क्षमा करने की सीख देता है। क्षमा मांगना साहस भरा काम है, न कि दुर्बलता का। क्षमा करना वीरता का काम है। पर्युषण का यह पक्ष हमारे सामाजिक-पारिवारिक संबंधों को नया जीवन देता है। पर्युषण का अर्थ है - 'परि' यानी चारों ओर से , 'उषण ' यानी धर्म की आराधना। पर्युषण अर्थात आत्मा के पास बैठो और उसकी सार - संभाल करो। वर्ष भर के सांसारिक क्रिया - कलापों के कारण उसमें जो दोष चिपक गया है , उसे दूर करने का प्रयास करो। शरीर के पोषण में तो हम पूरा वर्ष व्यतीत कर देते हैं। पर्युषण के आठ दिनों में हम शरीर के राजा अर्थात आत्मा की ओर ध्यान दें। अपने चारों ओर फैले बाहर के विषय - विकारों से मन को हटा कर अपने घर में आध्यात्मिक भावों में लीन हो जाना। यदि हम हर घड़ी हर समय अपनी आत्मा का शोधन नहीं कर सकते तो कम से कम पर्युषण के इन आठ दिनों में तो अवश्य ही करें। आठ कर्मों के निवारण के लिए साधना के ये आठ दिन जैन परंपरा में सबसे महत्वपूर्ण बन गए। सारांश में हम यह कह सकते हैं कि इन आठ दिनों में धर्म ही जीवन का रूप ले लेता है। धर्म से समाज में सहयोग और सामाजिकता का समावेश होता है। बगैर इसके समाज का अस्तित्व संभव नहीं है। इसी से समाज , जाति और राष्ट्र में समरसता आती है और उसकी उन्नति होती है। इसी से मनुष्य का जीवन मूल्यवान बनता है। धर्म प्रधान व्यक्ति सभी को समान दृष्टि से देखता है। अमीर - गरीब , ऊंच - नीच सभी उसकी दृष्टि में बराबर हैं। धर्म प्रधान व्यक्ति न किसी से डरता है और न ही उससे कोई डरता है। धर्म तो जीवन की औषधि है। वह जब मनुष्य में आता है तो ईर्ष्या , मद , घृणा जैसे कई रोग व विकार स्वत - दूर हो जाते हैं। पर्युषण महापर्व धर्ममय जीवन जीने का संदेश देता है।

आत्मा की दिवाली है संवत्सरी महापर्व

(लेखक - कांतिलाल मांडोत)

तप त्याग और क्षमायाचना से अंतर्मन को निर्मल करने का पावन पर्व

जैन धर्म में पर्युषण महापर्व आत्मशुद्धि, संयम, तप और त्याग की साधना का पर्व है। इस महापर्व का अंतिम दिन संवत्सरी पर्व कहलाता है। संवत्सरी केवल एक धार्मिक तिथि नहीं, बल्कि आत्मा के भीतर झांकने, वर्षभर के कर्मों का लेखा-जोखा करने और अपने मन को वैर-विरोध से मुक्त करने का अवसर है। इसी कारण संवत्सरी को जैन धर्म में 'आत्मा की दिवाली' कहा गया है। जिस प्रकार दीपावली पर घर-आंगन की सफाई कर दीप जलाए जाते हैं, उसी प्रकार संवत्सरी पर आत्मा में जमा क्रोध, अहंकार, छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेष और मनमुटाव की गंदगी को क्षमा के भाव से दूर कर अंतर्मन में शांति का दीप जलाया जाता है।

पर्युषण के दिनों में जैन समाज तप, त्याग, स्वाध्याय, ध्यान, सामायिक, प्रतिक्रमण और आत्मचिंतन के माध्यम से अपनी जीवनशैली को संयमित करता है। संवत्सरी इस साधना का चरम बिंदु है। इस दिन व्यक्ति दूसरों की गलतियां खोजने के बजाय स्वयं के भीतर झांकता है। पिछले बारह महीनों में उसके व्यवहार से किसी को दुख पहुंचा हो, किसी के साथ विवाद हुआ हो, किसी के मन को ठेस लगी हो या जाने-अनजाने किसी जीव के प्रति हिंसा अथवा अपराध हुआ हो, तो वह उसके लिए हृदय से क्षमा मांगता है। यही संवत्सरी की वास्तविक भावना है।

संवत्सरी के अवसर पर 'मिच्छामि दुक्कड़म' का उच्चारण केवल परंपरा निभाने के लिए नहीं किया जाता। इसका भाव अत्यंत गहरा है। इसका अर्थ है कि मेरे द्वारा मन, वचन अथवा कर्म से किसी को कष्ट पहुंचा हो तो मैं उसके लिए क्षमा चाहता हूं। साथ ही मेरे मन में भी किसी के प्रति कोई शिकायत, द्वेष या वैर न रहे। इस प्रकार क्षमा मांगना और क्षमा करना दोनों आत्मिक शुद्धि की प्रक्रिया बन जाते हैं। जब मनुष्य अपने अहंकार को पीछे रखकर सामने वाले से क्षमा मांगता है, तब उसके भीतर विनय और सरलता का जन्म होता है।

संवत्सरी पर्व पर तपस्या की आराधना का भी विशेष महत्व है। जैन श्रावक-श्राविकाएं अपनी सामर्थ्य और श्रद्धा के अनुसार एक उपवास, दो उपवास तथा अठैई जैसे कठिन तप की आराधना करते हैं। कई साधक एकासन, आयंबिल और अन्य तप साधनाओं के माध्यम से आत्मसंयम का अभ्यास करते हैं। तप का उद्देश्य केवल शरीर को कष्ट देना नहीं, बल्कि इच्छाओं पर नियंत्रण स्थापित करना और आत्मबल को जागृत करना है। जब व्यक्ति अपनी इंद्रियों और मन पर संयम करना सीखता है, तभी वह जीवन में क्षमा, करुणा और अहिंसा को वास्तविक रूप से उतार सकता है।

संवत्सरी के दिन प्रतिक्रमण की विशेष परंपरा है। प्रतिक्रमण का भाव पीछे लौटकर अपने जीवन को देखना है।

व्यक्ति विचार करता है कि पूरे वर्ष उसने कहां असावधानी की, किसके प्रति कठोर शब्द कहे, किससे विवाद किया, किसके साथ मनमुटाव हुआ और किन परिस्थितियों में उसके मन में क्रोध या द्वेष उत्पन्न हुआ। यह आत्मनिरीक्षण उसे दूसरों को दोष देने के बजाय स्वयं को सुधारने की प्रेरणा देता है। यही कारण है कि संवत्सरी को आत्ममंथन का महान अवसर माना गया है।

जैन दर्शन में क्षमा को अत्यंत ऊंचा स्थान दिया गया है। मन में जमा हुआ वैर और द्वेष सबसे पहले उसी व्यक्ति को अशांत करता है जिसके भीतर वह रहता है। बाहर से व्यक्ति कितना भी सुखी दिखाई दे, यदि उसके मन में किसी के प्रति क्रोध या शिकायत बनी हुई है तो भीतर शांति नहीं रह सकती। संवत्सरी इस बोझ को उतारने का अवसर देती है। क्षमा का भाव मन को हल्का करता है और संबंधों में फिर से मधुरता लाने का मार्ग खोलता है।

संवत्सरी की क्षमा केवल परिवार, मित्रों या परिचितों तक सीमित नहीं है। जैन धर्म का मूल आधार अहिंसा है। इसलिए इस पर्व पर समस्त जीव जगत के प्रति संवेदना का भाव रखा जाता है। मनुष्य से लेकर सूक्ष्म जीवों तक किसी को जाने-अनजाने कष्ट पहुंचा हो तो उसके प्रति भी क्षमाभाव प्रकट किया जाता है। हवा, पानी, वनस्पति, जीव-जंतु और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता जैन जीवनदर्शन की विशेष पहचान है। संवत्सरी इसी व्यापक करुणा और अहिंसा को जीवन में उतारने का संदेश देती है।

यह पर्व हमें यह भी सिखाता है कि क्षमा केवल शब्द नहीं, बल्कि जीवन का संस्कार बननी चाहिए। किसी से 'मिच्छामि दुक्कड़म' कहने के बाद यदि मन में वही क्रोध और वैर बना रहे तो संवत्सरी की भावना अधूरी रह जाती है। सच्ची क्षमा तब है जब हृदय से पुराने गिले-शिकवे समाप्त हों और संबंधों में नई शुरुआत की भावना पैदा हो। क्षमा मांगने में छोटापन नहीं, बल्कि आत्मबल और विनम्रता होती है। इसी तरह किसी की भूल को क्षमा कर देना भी महानता का परिचायक है।

आज के तनावपूर्ण और भागदौड़ भरे जीवन में संवत्सरी का संदेश और अधिक प्रासंगिक हो गया है। परिवारों में छोटी-छोटी बातों पर मतभेद, सामाजिक जीवन में प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत संबंधों में बढ़ती कटुता मनुष्य के भीतर अशांति पैदा कर रही है। ऐसे समय में संवत्सरी हमें ठहरकर स्वयं से प्रश्न करने की प्रेरणा देती है कि आखिर हम अपने भीतर कितना बोझ लेकर चल रहे हैं। यदि एक बार मन से अहंकार और द्वेष को हटाकर क्षमा का दीप जला दिया जाए तो जीवन में नई शांति का अनुभव किया जा सकता है।

संवत्सरी वास्तव में बाहर की सजावट का नहीं, भीतर के उजाले का पर्व है। दीपावली में दीपक घर को रोशन करता है, जबकि संवत्सरी का क्षमा दीप आत्मा को प्रकाशित करता है। तप से आत्मबल, त्याग से संयम, प्रतिक्रमण से आत्मबोध और क्षमा से मन की निर्मलता प्राप्त होती है। वर्षभर के पाप कर्मों, विवादों और मनमुटाव को हृदय से छोड़कर जब व्यक्ति सब जीवों से क्षमा मांगता है और सभी को क्षमा करता है, तभी संवत्सरी की साधना सार्थक होती है। यही इस पावन पर्व का सबसे बड़ा संदेश है कि मनुष्य अपने भीतर परिवर्तन लाए, अहिंसा और करुणा को अपनाए तथा क्षमा के माध्यम से अपने जीवन को अधिक शांत, सरल और निर्मल बनाए।

(वरिष्ठ पत्रकार साहित्यकार स्तम्भकार)

(यह लेखक के व्य क्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अ निवार्य नहीं है)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

नागालैंड में मिलावटी शराब पीने से 10 की मौत, आबकारी विभाग ने जारी की चेतावनी

कोहिमा (एजेंसी)। शराबबंदी वाले राज्य नागालैंड के तुएनसांग में मिलावटी शराब पीने से 10 लोगों की मौत के बाद राज्य के आबकारी एवं निषेध विभाग ने अज्ञात या संदिग्ध स्रोत की शराब के सेवन के खिलाफ चेतावनी जारी की है। तुएनसांग पुलिस ने बताया कि 10 से 12 सितंबर के बीच मरने वालों में से 9 लोगों का शराब के सेवन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध था, हालांकि मौत के कारणों का अभी तक निर्णायक रूप से पता नहीं चला है। नागालैंड के डीजीपी ने बताया कि पीड़ितों की मौत मिलावटी शराब पीने से हुई। पुलिस के मुताबिक एक अन्य व्यक्ति ने आत्महत्या की है इस मामले की अलग से जांच की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट में स्थानीय लोगों के हवाले से बताया गया है कि वास्तविक मृतकों की संख्या इससे ज्यादा हो सकती है और संभवत: कुछ मौतें दर्ज ही नहीं हुई हैं। एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया है कि 12 सितंबर को तुएनसांग पुलिस को तुएनसांग सिविल अस्पताल में भर्ती लोगों की लगातार हो रही मौतों के संबंध में रिपोर्ट मिली थी। पुलिस ने बताया कि शुरुआती पूछताछ में पता चला है कि अधिकतर मामलों में मृतकों ने धुंधली दृष्टि, गंभीर सिरदर्द, चक्कर आना, मतली और उल्टी जैसे लक्षण पैदा होने से पहले शराब का सेवन किया था। पुलिस ने कहा कि मिलावटी शराब का सेवन मौतों का संभावित कारण माना जा रहा है, लेकिन इस स्तर पर वैज्ञानिक रूप से इसकी पुष्टि नहीं की जा सकी है। बयान में कहा गया है कि जांच के तहत वैज्ञानिक और फोरेंसिक प्रक्रियाएं अपनाई जाएंगी।

यूजीसी पर भागवत की दो टूक

भीलवाड़ा (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने यूजीसी के प्रस्तावित नियमों को लेकर स्पष्ट कहा है। 'न यह कानून बना है,ना बनेगा।' भीलवाड़ा में जैन आचार्य पुलक सागर महाराज से मुलाकात के दौरान भागवत ने कहा, यूजीसी से जुड़े नियम अभी प्रस्तावित हैं। आचार्य पुलक सागर ने इन प्रावधानों को लेकर सामाजिक विभाजन की आशंका जताते हुए चिंता व्यक्त की है। इसी बीच केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने समान नागरिक संहिता यानी यूसीसी को लेकर बड़ा राजनीतिक लक्ष्य सामने रखा है। मुंबई में शाह ने कहा कि भाजपा-नीत राजग की 21 राज्य सरकारें 2029 से पहले यूसीसी लागू करेंगी। इन दोनों बयानों को लेकर राजनीतिक बहस तेज हो गई है। यह विषय इसलिए महत्वपूर्ण है, यूजीसी और यूसीसी दो अलग विषय हैं। एक उच्च शिक्षा के नियमन से जुड़ा है।दूसरा विवाह, तलाक, उत्तराधिकार जैसे व्यक्तिगत कानूनों में समान व्यवस्था से संबंधित है। इसलिए भागवत और शाह के बयानों को लेकर देश में राजनीतिक बवाल बढ़ गया है। संघ-भाजपा खेमे के दो महत्वपूर्ण संदेशों के रूप में देखा जाना चाहिए। वर्तमान बहस का असली सवाल यह है। प्रस्तावित यूजीसी नियमों पर सरकार आगे क्या रुख अपनाती है। कई राज्यों में यूजीसी को लागू कर दिया गया है।यूसीसी को 2029 से पहले लागू करने के लिए राज्यों में कितनी सहमति बन पाती है। यह देखना जरूरी है।

चंदौसी में गंगा-जमुनी तहजीब की मिसाल-मुस्लिम समाज ने गणपति को चढ़ाए दो क्विंटल लड्डू

संभल (एजेंसी)। उत्तरप्रदेश के संभल जिले के चंदौसी में मुस्लिम समाज ने भगवान गणेश को दो क्विंटल लड्डू का भोग चढ़ाकर आपसी भाईचारे और सांप्रदायिक सौहार्द की अनोखी मिसाल पेश की। गणेश चौथ मेला के दौरान हुआ यह आयोजन सालों से चली आ रही एक अनूठी परंपरा का हिस्सा है। चंदौसी का गणेश चौथ मेला अपनी धार्मिक आस्था और गंगा-जमुनी तहजीब के लिए मशहूर है। इस वर्ष भी मेला का उद्घाटन विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने मिलकर किया था, जो इस क्षेत्र की साझा संस्कृति को दर्शाता है। सोमवार को मेला में भव्य रथ यात्रा भी निकाली गई, जिसमें विभिन्न प्रकार की स्वचालित झांकियां मुख्य आकर्षण थीं और इन्हें देखने के लिए शहर के मुख्य मार्गों पर बड़ी संख्या में लोग उमड़े थे। इस धार्मिक आयोजन के बीच, मुस्लिम समाज की ओर से भगवान गणेश को चढ़ाए गए दो क्विंटल लड्डू की खूब चर्चा रही। मुस्लिम समाज प्रतिनिधि ने बताया कि मुस्लिम समाज साल 2001 से हर वर्ष भगवान गणेश को लड्डू का भोग चढ़ाता आ रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान में भागीदारी नहीं, बल्कि आपसी प्रेम, सद्भाव और सांप्रदायिक सौहार्द का जीवंत संदेश है। इस अनूठे प्रयास ने एक बार फिर चंदौसी की पुरानी परंपरा और आपसी सौहार्द को मजबूती से उजागर किया, जहाँ त्यौहारों को मिलकर मनाने की भावना हर वर्ष और प्रगाढ़ होती दिखती है।

केदारनाथ यात्रा तीसरे दिन भी बंद, देश के कई राज्यों में बारिश-बाढ़ का अलर्ट

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड में केदारनाथ पैदल मार्ग पर लगातार पत्थर गिरने के कारण केदारनाथ यात्रा तीसरे दिन भी बंद रही। सुरक्षा बलों ने करीब 7,000 यात्रियों को सुरक्षित निकालकर गौरीकुंड की ओर भेज दिया है, जबकि 500 से अधिक तीर्थयात्री अभी फंसे हुए हैं। राहत की बात यह है कि केदारनाथ धाम के लिए आज से हेलीकॉप्टर सेवाएँ शुरू हो गई हैं, लेकिन पैदल यात्रा अभी भी रोकी गई है।इस बीच, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और पंजाब सहित- देश के कई राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है।

यूसीसी पर एनडीए के सहयोगी दलों ने बढ़ाई भाजपा की चिंता

शाह के बयान के बाद सामने आए तीन अलग सुर

नई दिल्ली, एजेंसी।
केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने हाल ही में 2029 तक 21 भाजपा-एनडीए शासित राज्यों में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने का लक्ष्य रखा है। हालांकि, उनके इस बयान के तुरंत बाद ही सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के कुछ प्रमुख सहयोगी दलों ने इस मुद्दे पर सावधानी भरा रुख अपना लिया है, जिससे भाजपा की राह थोड़ी मुश्किल होती दिख रही है। तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी), जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) और लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने यूसीसी को लेकर अपने-अपने विचार रखे हैं, जो गठबंधन के भीतर बढ़ती सुगबुगाहट को दर्शाते हैं।

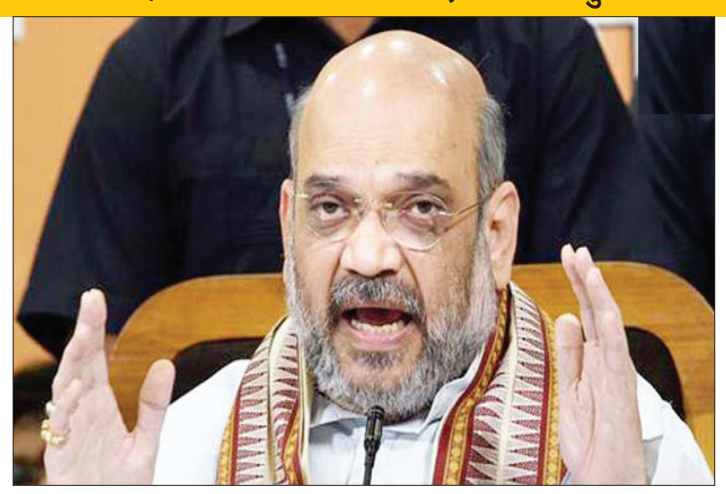

संसद में बहुमत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली तेलुगु देशम पार्टी ने यूसीसी पर सशर्त समर्थन का संकेत दिया है। लोकसभा में टीडीपी के नेता लावु कृष्ण देवरायालु ने कहा कि जब इसकी जरूरत महसूस होगी, तब इस पर विचार किया जाएगा और इसे अपनाने से पहले विभिन्न हितधारकों को चर्चा में शामिल किया जाएगा। यह भी गौरतलब है कि 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले टीडीपी प्रमुख और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने यूसीसी की बात आने पर मुस्लिम समुदाय के साथ खड़े होने की बात कही थी, जो उनके वर्तमान रुख में सावधानी का संकेत देता है। बिहार में नीतीश कुमार की जनता दल यूनाइटेड ने अपना रुख साफ करते हुए कहा है कि पार्टी राष्ट्रीय स्तर पर यूसीसी विधेयक का समर्थन करती है, लेकिन इसे बिहार में लागू करने के पक्ष में नहीं है। पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात कर इस मुद्दे पर चर्चा करने की बात कही है। नीतीश कुमार अतीत में यूसीसी का समर्थन कर चुके हैं, लेकिन उनका जोर इस बात पर रहा है कि सभी समुदायों को साथ लेकर आम सहमति बनाई जानी चाहिए।

भाजपा के एक अन्य सहयोगी और लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के नेता चिराग पासवान ने भी यूसीसी पर सावधानी भरा रुख अपनाया। उन्होंने संविधान में विभिन्न समुदायों की परंपराओं और प्रथाओं को मान्यता दिए जाने का हवाला देते हुए विविधता के महत्व पर जोर दिया। पासवान ने कहा कि यूसीसी का प्रस्ताव सार्वजनिक किया जाना चाहिए और संबंधित हितधारकों से व्यापक चर्चा व विचार-विमर्श के बाद ही पार्टी अपना रुख स्पष्ट करेगी। उन्होंने अनुसूचित जनजातियों को मिली छूट का भी विशेष रूप से उल्लेख किया। हालांकि, कुछ सहयोगी दल यूसीसी के प्रति अपना पूर्ण समर्थन दोहरा चुके हैं। एकनाथ शिंदे की शिवसेना और हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (सेक्युलर) ने यूसीसी को लेकर अपना समर्थन व्यक्त किया। शिवसेना नेता श्रीकांत शिंदे ने यूसीसी को समानता, न्याय और राष्ट्रीय एकता के सिद्धांतों पर आधारित बताया, जबकि हम के राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष कुमार सुमन ने अमित शाह के यूसीसी संबंधी बयान का पूरे समर्थन के साथ स्वागत किया।

बिहार में बाढ़ से जानमाल को नुकसान-खड़गे और राहुल गांधी ने जताया दुख

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने बिहार में बाढ़ से हुए जानमाल के नुकसान पर दुख जताया और पार्टी के कार्यकर्ताओं से प्रभावित लोगों की मदद के लिए हाथ बढ़ाने अपील की। खड़गे ने 'एक्स' पर पोस्ट कर कहा- बिहार में बाढ़ से हुई जनहानि अत्यंत पीड़ादायक है। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं। उन्होंने कहा कि 15 जिलों में करीब 50 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हैं और हजारों गांवों में जनजीवन अस्त-व्यस्त है। खड़गे ने इस बात पर जोर दिया कि संकट की इस घड़ी में सरकार की प्राथमिकता हर प्रभावित परिवार तक राहत और मदद पहुंचाने की होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार और प्रशासन राहत, बचाव, चिकित्सा सहायता और पुनर्वास कार्यों में कोई कसर न छोड़ें। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक खड़गे ने कहा कि कांग्रेस के सभी कार्यकर्ताओं से अपील है कि वे प्रभावित क्षेत्रों में आगे बढ़कर लोगों की मदद करें। पूरा देश इस कठिन समय में बिहार के साथ खड़ा है। राहुल गांधी ने सरकार और प्रशासन से राहत एवं बचाव अभियान पूरी तत्परता से चलाकर प्रभावित परिवारों तक जरुरी मदद जल्द पहुंचाने का आग्रह किया। उन्होंने एक्स पर पोस्ट में कहा- बिहार में आई विनाशकारी बाढ़ से हुई जनहानि अत्यंत हृदयविदारक है। उन्होंने कहा कि इस आपदा में अपने प्रियजनों को खोने वाले परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। त्रासदी से प्रभावित सभी लोगों के साथ मेरी सहानुभूति है। राहुल ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से अपील है कि वो आगे बढ़कर प्रभावित लोगों की हरसंभव मदद करें। बता दें बिहार और पड़ोसी देश नेपाल के जलग्रहण क्षेत्र में पिछले चार-पांच दिनों से लगातार हो रही बारिश के कारण राज्य में बाढ़ की स्थिति गंभीर बनी हुई है और 15 जिलों में करीब 50 लाख लोग प्रभावित हुए हैं। कई नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। आपदा प्रबंधन विभाग ने सोमवार को जारी बयान में बताया कि पटना, भोजपुर, सारण, वैशाली, भागलपुर, बेगूसराय, बक्सर, समस्तीपुर, मुंगेर, कटिहार, लखीसराय, खगड़िया, पूर्णिया, मधेपुरा और अररिया जिलों के 88 प्रखंडों की 575 ग्राम पंचायतों के 49.36 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हैं।

गोल्डन खड़ाऊ, चांदी के कड़े: धीरेंद्र शास्त्री ने अंबानी इवेंट में जीता दिल

मुंबई, एजेंसी।
बीती रात अंबानी परिवार ने मुंबई स्थित अपने घर में गणपति बप्पा का भव्य स्वागत किया, जिसमें बॉलीवुड, खेल और राजनीतिक जगत के साथ-साथ कई धर्मगुरुओं ने शिरकत की। बाबा रामदेव और जया किशोरी के अलावा, बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री भी अंबानी के गणेशोत्सव में पहुंचे। एंटीलिया में धीरेंद्र शास्त्री का लुक सबसे ज़्यादा चर्चा का विषय रहा, खासकर उनके पैरों ने सबका ध्यान खींचा।

हमेशा की तरह भगवा कुर्ते और सफ़ेद धोती में दिखे शास्त्री ने मरून शॉल ओढ़ी हुई थी और माथे पर चंदन-टीका लगाए थे। उनका अंदाज जितना सादा था, उतना ही क्लासी लग रहा था। लेकिन उनके पैरों ने सभी को अचंभित किया, क्योंकि धीरेंद्र शास्त्री जूतों या चप्पलों की जगह उन्होंने पारंपरिक गोल्डन खड़ाऊ पहने थे। पैरों में आलता लगा हुआ था और चांदी के कड़े भी नजर आए, जो उनके पारंपरिक अवतार को और ज़्यादा ख़ास बना रहे थे। धीरेंद्र शास्त्री के आलता लगे पैरों की तस्वीरें इंटरनेट पर तेज़ी से वायरल हुईं, और लोगों ने उनके इस सादगीपूर्ण और सांस्कृतिक रूप को बेहद सराहा। इस भव्य आयोजन में बाबा भी भगवा वेश में दिखे, जबकि सलमान खान, रेखा, करीना-करिश्मा कपूर, कटरीना-विक्की जैसे बड़े बॉलीवुड सितारे और कई क्रिकेटर्स अपने परिवारों के साथ बप्पा के दर्शन करने पहुंचे थे।

राहुल-प्रियंका ने 130 नेताओं से पूछा- आपने क्या किया?

-कांग्रेस में आधे सचिवों की छुट्टी की संभावना

नई दिल्ली, एजेंसी।
कांग्रेस संगठन में लंबे समय से प्रतीक्षित बड़े फेरबदल की दिशा अब साफ होती दिख रही है। पार्टी नेतृत्व संगठन को नए सिरे से मजबूत करने की तैयारी में है और जल्द ही अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के सचिवों में भारी बदलाव कर सकती है। मौजूदा सचिवों में से करीब आधे को उनकी जिम्मेदारियों से मुक्त किए जाने की संभावना है। इस कवायद के तहत, पिछले एक सप्ताह में राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा और एआईसीसी महासचिव (संगठन) केसी वेणुगोपाल ने लगभग 130 संभावित उम्मीदवारों के साक्षात्कार लिए हैं।

नए सचिवों के चयन के लिए समूह साक्षात्कार की प्रक्रिया 7 सितंबर से शुरू हुई थी, जिसमें 12 से 14 नेताओं के बैच में उम्मीदवारों से सवाल पूछे गए। सूत्रों के अनुसार, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी और केसी वेणुगोपाल ने प्रत्येक उम्मीदवार के लिए तैयार डोजियर के आधार पर उनके काम, प्रदर्शन, पार्टी संगठन में भूमिका और योगदान को लेकर विस्तार से सवाल किए। उम्मीदवारों से अपनी भूमिका में किए गए कार्यों, उसके पीछे के कारणों, पार्टी के लिए योगदान और उन क्षेत्रों के बारे में पूछा गया जहां कमी रह गई। उनसे काल्पनिक परिस्थितियों, कमजोर प्रदर्शन वाले राज्यों में पार्टी को मजबूत करने के उपायों और संगठन सृजन अभियान पर उनके विचारों को लेकर भी प्रश्न पूछे गए। उम्मीदवारों से उनके राजनीतिक सफर और सबसे उल्लेखनीय प्रदर्शन के बारे में भी पूछा गया। इस बड़े फेरबदल से पहले, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा मंगलवार को मौजूदा एआईसीसी सचिवों से भी मुलाकात करेंगे। इस बैठक में उनके कामकाज की समीक्षा की जाएगी और उन्हें फीडबैक दिया जाएगा। माना जा रहा है कि करीब 50 फीसदी मौजूदा एआईसीसी सचिवों को उनकी मौजूदा जिम्मेदारियों से मुक्त किया जा सकता है। मंगलवार की इस बैठक का आधिकारिक एजेंडा अभी घोषित नहीं हुआ है, लेकिन इसमें प्रदर्शन और प्रस्तावित संगठनात्मक बदलावों पर चर्चा की प्रबल संभावना है। कांग्रेस में वर्तमान में 64 एआईसीसी सचिव हैं, जिनमें से अधिकांश को अलग-अलग राज्यों की जिम्मेदारी दी गई है। वे संबंधित राज्यों में एआईसीसी महासचिवों या प्रभारी नेताओं के अधीन काम करते हैं और राज्य इकाइयों के कामकाज की निगरानी करते हैं। कुछ सचिवों को दिल्ली स्थित पार्टी के महत्वपूर्ण कार्यालयों में भी तैनात किया गया है। हालांकि, इस पूरी कवायद में उन नेताओं को भी ध्यान में रखा जाएगा जिन्हें हाल ही में संगठन सृजन अभियान के तहत नई जिम्मेदारियां दी गई हैं या संगठन में प्रमोट किया गया है।

गुरुग्राम हिट एंड रन केस की पीड़िता बोली- सिंपैथी गेम खेल रहा आरोपी

गुरुग्राम, एजेंसी।
सोमवार को एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई, जहां एक महिला बाइकर को कार चालक ने कथित तौर पर जानबूझकर टक्कर मार दी। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद पीड़िता सिया ने आरोपी कल्याण बैंसला पर पलटवार किया है। सिया ने कहा कि आरोपी केवल सिंपैथी गेम खेल रहा है और उसकी जान भी जा सकती थी।

वायरल वीडियो में देखा जा सकता है कि एक तेज रफ्तार कार एक महिला बाइकर को जोरदार टक्कर मारती है, जिसके बाद महिला सड़क पर गिरकर लुढ़कती चली जाती है और उसकी बाइक काफी दूर तक घिसटती हुई जाती है, जिससे चिंगारियां निकल रही थीं। इस घटना के बाद कार चालक कल्याण बैंसला ने अपनी सफाई में जानबूझकर टक्कर मारने से इनकार किया था, जिस पर सिया ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। सिया ने अपनी आपबीती सुनाते हुए कहा कि वायरल वीडियो में स्पष्ट दिख रहा है कि उन्हें किस तरह टक्कर मारी गई। उन्होंने बैंसला के इस दावे को खारिज किया कि उसे पता नहीं था कि बाइक एक लड़की चला रही थी। सिया ने सवाल किया, मेरे बाल इतने लंबे थे और मैंने चोटी बनाई थी। आपने मेरा पीछा किया और बाइक रोकने को कहा, फिर कैसे नहीं पता था? उन्होंने कहा कि चाहे वे तेज चलें या धीरे, किसी को भी उनका पीछा करने का अधिकार नहीं है। पीड़िता ने गंभीर आरोप लगाते हुए कहा, अगर दो-तीन सेकंड का गैप हो जाता तो मेरी मौत हो सकती थी। मैं रोड पर गिरी थी और बाइक घिसटती चली गई। अगर आरोपी को दुख ही हो रहा था, तो वह रुका क्यों नहीं? उसकी जिम्मेदारी थी कि वह रुककर देखे कि जिसे टक्कर मारी, वह मरा या बचा। सिया ने बैंसला के सिंपैथी गेम पर कटाक्ष करते हुए कहा कि ऐसे लोग यह भी नहीं सोचते कि उनके घर में भी महिलाएं होंगी।

वहीं, आरोपी कल्याण बैंसला ने अपनी सफाई में जानबूझकर टक्कर मारने से इनकार किया है। जिम संचालक और खुद को अंतरराष्ट्रीय कबड्डी खिलाड़ी बताने वाले बैंसला ने कहा कि उसने यू-टर्न के पास कार पर से अपना नियंत्रण खो दिया था। उसने उलटा महिला बाइकर सिया और उनके साथी पर उकसाने का आरोप लगाया। बैंसला के अनुसार, वीडियो में देखिए कि कौन बार-बार बाइक तेज और धीमी कर रहे थे। उसने यह भी दावा किया कि घटनास्थल पर रुकने पर उसे डर था कि बाइक सवारों का एक समूह उसे और उसके परिवार को पीट सकता था, इसलिए वह वहां से भाग गया। विवाद के बाद आरोपी ने अपना इंस्टाग्राम अकाउंट भी बंद कर दिया।

कांग्रेस ने ममता को दिया झटका, मदद से किया इनकार

कोलकाता, एजेंसी।
पश्चिम बंगाल की राजनीति में पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के सामने चुनौतियां फिलहाल कम होती नहीं दिख रही हैं। खबर है कि नंदीग्राम उपचुनाव में मदद के लिए उन्होंने कांग्रेस से संपर्क साधा था, लेकिन पार्टी ने उनका प्रस्ताव मानने से साफ इनकार कर दिया है। हालांकि, इसे लेकर आधिकारिक रूप से किसी भी पार्टी ने कुछ नहीं कहा है। सूत्रों के अनुसार, ममता बनर्जी ने कांग्रेस के वरिष्ठ नेता केसी वेणुगोपाल से बात की थी। उन्होंने नंदीग्राम सीट पर कांग्रेस के लिए लड़ने का वादा करते हुए रेजीनगर सीट पर तृणमूल कांग्रेस उम्मीदवार के लिए समर्थन मांगा था। यह भी कहा गया है कि ममता ने नंदीग्राम से अपने प्रत्याशी का नाम वापस लेने की भी पेशकश की थी, जिससे संकेत मिल रहे थे कि वह कांग्रेस

के साथ गठबंधन की कोशिश में हैं। हालांकि, कांग्रेस ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। पार्टी सूत्रों ने बताया कि तृणमूल शासन में कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर हुए कथित अत्याचारों के चलते उन्होंने यह कदम उठाया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष शुभांकर सरकार के मुताबिक, अगर टीएमसी गठबंधन चाहती है, तो उसे नंदीग्राम और रेजीनगर, दोनों सीटों पर होने वाले उपचुनावों में कांग्रेस का साथ देना होगा। दोनों ही सीटों पर 6 अक्टूबर को वोटिंग होगी और 9 अक्टूबर को मतगणना होगी। तृणमूल कांग्रेस ने नंदीग्राम सीट पर संचिता प्रधान डे को और रेजीनगर से रबीउल आलम चौधरी को उम्मीदवार बनाया है। खबरें हैं कि संचिता प्रधान डे की उम्मीदवारी को लेकर स्थानीय स्तर पर नाराजगी का दौर शुरू हो गया है, क्योंकि उनका नाम साल 2014 के शिक्षक भर्ती घोटाले में आया था। उधर, कांग्रेस ने रेजीनगर से मोहम्मद अब्दुल्लाहिल कफी और नंदीग्राम से मिलन प्रधान को मैदान में उतारा है।ममता बनर्जी के लिए चुनौतियां यहीं खत्म नहीं होतीं। ऋताब्रत बनर्जी की अगुवाई वाले टीएमसी के बागी गुट ने भी दोनों सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए हैं। यह गुट टीएमसी के नाम और चिह्न पर ही चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहा है। उनकी तरफ से नंदीग्राम से मोहम्मद एतेशामुल हक और मुर्शिदाबाद की रेजीनगर सीट से सफीउज्जमां शेख मैदान में होंगे।

भारत रक्षा निर्यातक बनने की दिशा में तेजी से बढ़ रहा आगे: राजनाथ सिंह

नई दिल्ली,, एजेंसी।
भारत आज आयातक से रक्षा निर्यातक बनने की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है। केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने नई दिल्ली में आयोजित डीआरडीओ-उद्योग समन्वय बैठक 'विमर्श 2026' में यह बात कही। उन्होंने देश की रक्षा आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को प्राप्त करने में स्टार्टअप और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया।

केंद्रीय मंत्री सिंह ने बताया कि बीते कुछ वर्षों में ये छोटे उद्यम नवाचार के नए ध्वजवाहक बनकर उभरे हैं, जो नए विचारों और नई प्रौद्योगिकियों को जन्म दे रहे हैं। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने इनके लिए एक ऐसा ढांचा तैयार किया है, जिसके माध्यम से स्टार्टअप और एमएसएमई सीधे डीआरडीओ की प्रयोगशालाओं के साथ संवाद कर डीप टेक व विशिष्ट प्रौद्योगिकियों में काम करने का मौके प्राप्त कर सकते हैं।

केंद्रीय रक्षा मंत्री ने स्पष्ट किया कि आत्मनिर्भर भारत के लिए डीआरडीओ और उद्योगों की साझेदारी अब केवल उत्पादन तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। इस अनुसंधान, डिजाइन, परीक्षण, प्रमाणन और विनिर्माण की पूरी श्रृंखला में बढ़ाना होगा। उन्होंने कहा कि जब डीआरडीओ का ज्ञान, उद्योग की विनिर्माण क्षमता, स्टार्टअप का नवाचार और युवाओं का नए भारत का सपना एक साथ आएंगे, तब भारत की रक्षा क्षमता को दुनिया की कोई शक्ति रोक नहीं सकती।

उन्होंने उल्लेख किया कि आज जारी की गई नई नीतियां और दिशानिर्देश उद्योग के लिए नई संभावनाएं लेकर आए हैं। इनका फोकस उद्योग के नेतृत्व वाले अनुसंधान एवं विकास, स्टार्टअप और एमएसएमई के वित्त पोषण को बढ़ावा देना है। इसके साथ ही, शिक्षा जगत और उद्योग के बीच सहयोग तथा एआई, क्वांटम कंप्यूटिंग व हाइपरसोनिक जैसी भविष्य की प्रौद्योगिकियों में निवेश पर भी जोर दिया गया है।

राजनाथ सिंह ने स्वीकार किया कि रक्षा क्षेत्र में अनुसंधान और विकास के लिए केवल सरकार या डीआरडीओ के प्रयास पर्याप्त नहीं हैं; यह एक सहयोगात्मक प्रयास है। उन्होंने कहा कि डीआरडीओ और उद्योग के बीच की यह साझेदारी ही भारत को रक्षा विनिर्माण का वैश्विक केंद्र बना सकती है। उनका मानना है कि कोई भी उत्पाद भारत में विकसित कर देना महत्वपूर्ण है, लेकिन उससे भी महत्वपूर्ण है उत्पाद बनाने की क्षमता और आत्मविश्वास विकसित करना। केंद्रीय रक्षा मंत्री ने आत्मनिर्भरता के वास्तविक अर्थ को समझाया। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भरता का मतलब केवल कुछ कलपुर्जे या हथियार उपकरण विकसित करना नहीं, बल्कि यह हमारे चरित्र और रवैये का हिस्सा होना चाहिए। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची, 'मेक इन इंडिया' पहल, आईडेक्स, अदिति जैसे कार्यक्रम और रक्षा अनुसंधान एवं विकास बजट का 25

प्रतिशत निजी क्षेत्र के लिए आवंटित करने जैसे कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए हैं। ये कदम रक्षा क्षेत्र में आयात पर हमारी निर्भरता को कम करने और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने के लिए उठाए गए हैं।

स्वामी,मुद्रक व् प्रकाशक: सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास ,भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)